Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

मा पच्छ असाहुया भवे
अच्चेहि अणुसास अप्पगं।

मरणकाल में शोक या अनुताप न हो इसलिए तू काम-भोगों का अतिक्रमण कर अपने को अनुशासित कर।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 19 • 14 - 20 फरवरी, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 12-02-2022 • पेज : 12 • ₹ 10

वीरभूमि बीदासर में १५८वें वृहद् मर्यादा महोत्सव का शुभारंभ

सेवा की भावना हमारे धर्मसंघ के लिए मंगलकारी-कल्याणकारी है : आचार्यश्री महाश्रमण

बीदासर, ५ फरवरी, २०२२

माघ शुक्ला पंचमी, त्रिदिवसीय १५८वें मर्यादा महोत्सव के प्रथम दिवस का आयोजन–बीदासर का रजत मर्यादा महोत्सव प्रज्ञा-पुरुष श्रीमद् जयाचार्य ने वि०सं० १९२१ माघ शुक्ला सप्तमी को बालोतरा में मर्यादा महोत्सव का शुभारंभ आचार्य भिक्षु के अंतिम मर्यादा लिखत के आधार पर किया था। तब से अनवरत यह क्रम प्रति वर्ष आयोजित होता आ रहा है।

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु के ग्यारहवें पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल मंत्रोच्चार के साथ ही १५८वें मर्यादा महोत्सव की घोषणा एवं मर्यादा पत्र को स्थापित करते हुए फरमाया कि आज जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के सन् २०२२ के मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के शुभारंभ की मैं घोषणा करता हूँ। मर्यादा पत्र में जो मर्यादाएँ हैं, उनके प्रति सम्मान प्रकट करते हुए इस मर्यादा पत्र की जो भिक्षु स्वामी से जुड़ा हुआ है, इसकी संस्थापना करता हूँ।

मुनि दिनेश कुमार जी ने मर्यादा महोत्सव संस्थापना के उपलक्ष्य में घोषों की उद्घोषणा करवाई। मर्यादा गीत–'भीखण जी स्वामी भारी मर्यादा बाँधी संघ में' गीत का सुमधुर संगान किया।

आज का दिन मुख्यतया सेवा-चाकरी फरमाने का होता है। मुख्य नियोजिका जी ने सेवा के महत्त्व को उजागर करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति की दो धाराएँ

रही हैं, वैदिक और श्रमण। श्रमण परंपरा के साथ में जैन-बौद्ध और सांख्य दर्शन जुड़ा हुआ है। जैन परंपरा और बौद्ध परंपरा में सेवा को महत्त्व दिया गया है। पंच-सूत्र में गुरुदेव तुलसी ने लिखा है कि तीर्थंकर भगवान कहते हैं कि जो रुग्ण-वृद्धों की सेवा करता है, वो वास्तव में मेरी सेवा करता है। भगवान के इस वाक्य से ही हमें सेवा के महत्त्व का अनुमान लग जाता है।

जो व्यक्ति सेवा करता है, वह अपना मूल्य स्वतः बढ़ा लेता है। जो व्यक्ति सेवा करना जानता है, वो वास्तव में महान होता है। सेवा करने वाले के भीतर एक संवेदनशील हृदय हो, ज्ञान कम-ज्यादा हो बात अलग है। सेवा एक ग्रंथ है। जिसका दिल करुणा से भरा होता है, वह दूसरों की सेवा कर सकता है।

साध्वी जिनप्रभाजी ने साध्वियों की ओर से एवं मुनि कुमार श्रमण जी ने साधुओं की ओर से पूज्यप्रवर से सेवा-चाकरी फरमाने की अर्ज की।

पूज्यप्रवर ने सेवा दिवस पर मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि अहिंसा, संयम और तप धर्म होता है। हम लोग एक धर्मशासन के सदस्य हैं। जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मशासन के सदस्य हैं। आज हमारे धर्मसंघ के वार्षिक महोत्सव, मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय समारोह का शुभारंभ हुआ है।

मर्यादाओं का महोत्सव मनाया जाता है, यह एक महत्त्वपूर्ण है। हमारे धर्मसंघ में मर्यादाओं का विशेष महत्त्व है। ऐसा कोई प्राकार बना हुआ है, मर्यादाओं का इसके अंदर रहने वाला व्यक्ति एक संदर्भ में सुरक्षित रह सकता है। मर्यादाओं के साथ-साथ हमारे यहाँ सेवा की भी व्यवस्था है।

जहाँ संगठन-समुदाय होता है, अनेक व्यक्ति साथ में रहते हैं, परस्पर संबद्ध भी होते हैं, तो वहाँ सेवा-सहयोग की आवश्यकता होती है। चारित्रात्माओं सुस्थिरता की दृष्टि से भी सेवा का बड़ा महत्त्व होता है। हमारे धर्मसंघ में सेवा के प्रति रूझान भी मैं देखता हूँ। साधु-साध्वियाँ अनेक रूपों में सेवा करते हैं। मैं आत्मतोष अनुभव कर सकूँ, ऐसी स्थिति मुझे लगती है। यह सेवा की भावना हमारे धर्मसंघ के लिए मंगलकारी है। कल्याणकारी है।

शरीर है, तो कभी व्याधि भी अपना आसरा शरीर में ले सकती है। विभिन्न संदर्भों में सेवा की जा सकती है। उनका अपना-अपना महत्त्व है। ज्ञान देना-पढ़ाना भी बहुत अच्छी सेवा है। धर्म प्रचार के रूप में श्रावक समाज को संभालना भी एक सेवा है। श्रावक-श्राविकाएँ भी अपने ढंग से सेवा करते हैं।

एक सेवा होती है, परिचर्या की, चिकित्सा के रूप में सेवा। शारीरिक अक्षमता वालों की अग्लान भाव से सेवा करना यह हमारा एक धर्म हो जाता है। सेवा का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। अपेक्षा हो उन्हें सेवा मिलनी चाहिए। तपस्वी हो या नव दीक्षित हो उन्हें भी सेवा चाहिए।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

जिसका मन धर्म में रमा हो उसे देवता भी नमस्कार करते हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

बीदासर, ४ फरवरी, २०२२

मर्यादापुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी का अपनी धवल सेना के साथ वीरभूमि बीदासर में वृहद मर्यादा महोत्सव जो बीदासर में २५वाँ मर्यादा महोत्सव है। मर्यादा महोत्सव के मंगल प्रवेश के अवसर पर वीरभूमि बीदासरवासी अपने आराध्य को साक्षात पाकर धन्यता का अनुभव कर रहे थे।

शांतिदूत ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में मंगल के प्रति आकर्षण होता है। कोई भी कार्य प्रारंभ होकर सानंद सफलतामपूर्वक संपन्न हो जाए ऐसी भी मनोकामना रहती है। निर्विघ्नता की भी कामना रहती है। आदमी स्वयं का भी मंगल चाहता है और दूसरों के प्रति भी वह मंगलकामना करता है।

प्रश्न है, मंगल कैसे हो? मंगल निष्पन्न कर सकें, ऐसा मंगल भी दुनिया में क्या है? अनेक चीजों को मंगलकारक निमित्त के रूप में देखा जा सकता है। गुड़ आदि पदार्थों को भी मंगल रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। शास्त्रकार ने एक उद्घोष किया–उत्कृष्ट मंगल धर्म है। धर्म के सिवाय जितनी भी चीजें हैं, जिन्हें मंगल माना जाता है, वे उत्कृष्ट मंगल तो नहीं है।

जो मंगल सर्वोत्तम है, वो हमें प्राप्त हो। वह मंगल है–धर्म। दुर्गति की ओर गति कर चुके जीवों को जो धारण कर लेता है। अच्छे स्थान में उनको स्थापित कर देता है, वह धर्म होता है।

शास्त्रकार ने कहा है कि अहिंसा, संयम और तप धर्म है। अहिंसा परम धर्म है। प्राणियों को अपने तुल्य समझो।

जो व्यवहार मेरे लिए प्रतिकूल है, जो व्यवहार दूसरों से अपने साथ नहीं चाहता, तो मैं भी वह व्यवहार दूसरों के साथ न करूँ। जो व्यक्ति अहिंसा के पथ पर चलता है, वो व्यक्ति महान होता है। अहिंसा एक नीति होनी चाहिए। संयम भी धर्म है। मन, वाणी, शरीर और इंद्रियों का संयम हो। त्याग धर्म-भोग अधर्म, व्रत धर्म, अव्रत अधर्म। असंयम युक्त भोग है, वहाँ अधर्म है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 - 20 फरवरी, 2022

✦ *बाह्य आँखों का महत्त्व है तो भीतरी आँख और भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। साधक को उस आँख के द्वारा स्वयं को देखने का अभ्यास करना चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

संस्कार अच्छे हों तो जीवन में सुख-शांति बनी रहती है : आचार्यश्री महाश्रमण

चाड़वास, २ फरवरी, २०२२

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी सुजानगढ़ से विहार कर चाड़वास पधारे। पूज्यप्रवर का प्रवास चाड़वास के गुलाब भवन में हुआ। अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने बताया है कि एकांत सुख वाला स्थान जो मोक्ष होता है, वह प्राप्त कैसे होता है, इस बारे में बताया।

पहली बात बताई—सारा ज्ञान प्रकाशित हो जाए। संपूर्ण ज्ञान आत्मा में प्रकट हो, केवलज्ञान हो जाए। अज्ञान मिट जाए। जब अज्ञान-मोह का वर्जन होगा तब संपूर्ण ज्ञान होगा। राग और द्वेष का क्षय होगा तब अज्ञान और मोह दूर होंगे। ज्ञान का बहुत महत्त्व होता है। सामान्य ज्ञान कुंड के पानी की तरह होता है। केवलज्ञान कुएँ के पानी के समान है। कुएँ का पानी भीतर के स्रोत से प्रकट होता है। कुंड का पानी तो जितना उसमें डाला गया है, उतना ही निकाला जा सकता है।

जब चारों घात्य कर्म नष्ट-क्षीण होते हैं, तब केवलज्ञान प्रकट होता है। ज्ञान का अपना महत्त्व है। ज्ञान अच्छा है, पर साथ में राग-द्वेष क्षीण हो तब संपूर्ण ज्ञान, भीतर का ज्ञान हो सकेगा। राग-द्वेष जो हमारे भीतर है, उन्हीं से आदमी दुःख को प्राप्त होता है। राग-द्वेष नहीं तो मानो दुःख का

मूल खत्म हो गया। यह एक प्रसंग से समझाया कि जब तक हमारे चेतना रूपी कुएँ में राग और द्वेष के ये दो मरे हुए कुत्ते रहते हैं तब तक दुःख की बदबू-दुःख का अहसास हो सकता है।

अध्यात्म की साधना में राग और द्वेष को जीतना हमारे लिए मुख्य बात होती है। ज्ञान प्राप्त करना अच्छा है, ज्ञान के साथ जीवन में समता भाव, शांति का भाव, राग-द्वेष की अल्पता या क्षय का भाव भी जागे। संस्कार जीवन में अच्छे रहें। संस्कारों की सुगंध आती रहे। सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति ये तत्त्व जीवन में होते हैं, तो संस्कार अच्छे हो सकते हैं। जीवन में सुख-शांति की सौरभ प्रस्फुटित हो सकता है।

आज मैं चाड़वास आया हूँ। आचार्य महाप्रज्ञ जी का आचार्य काल का स्वतंत्र मर्यादा महोत्सव पहला चाड़वास में हुआ था। गुरुदेव तुलसी लाडनूं में विराजमान थे। चाड़वास के मुनि सोहनलालजी मेरी स्मृति में आ गए। उनकी दीक्षा के दिन परमपूज्य कालूगणी ने एक दिन में दो दीक्षा समारोह किए थे। छापर में पहली दीक्षा मुनि जसकरणजी को बाद में चाड़वास में मुनि सोहनलालजी की दीक्षा हुई थी।

मैं जब बच्चा था, तो मुनि सोहनलाल जी के संपर्क में सरदारशहर में ज्यादा रहा था। उन्होंने मुझे तत्त्वज्ञान के थोकड़े सिखाए थे। तेरापंथ की दान-दया की जो मान्यता है, वो उन्होंने मुझे बताई। मैं उनको सम्मान की भावना के साथ याद करता हूँ। उन्होंने मेरे पर उपकार किया था।

चाड़वास छापर का पड़ौसी क्षेत्र है। चाड़वास में हमारी कितनी चारित्रात्माएँ प्रवासित हुए हैं। चाड़वास की जनता में भी सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति—ये संस्कार सभी समाजों में पुष्ट रहें। चाड़वास के तेरापंथी लोगों में आध्यात्मिक, धार्मिक, साधना, सामायिक आदि-आदि के क्रम चलते रहें। शनिवार शाम की सामायिक व बच्चों में ज्ञानशाला का उपक्रम भी चलता रहे।

ज्ञान की बात है, राग-द्वेष मुक्ति की बात है। ज्ञान प्रकाशित हो, राग-द्वेष का क्षय हो। तो आदमी एकांत सुख वाले मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में बहादुर सेठिया, संयोजक संजय बच्छावत, तेयुप से विक्रम भंडारी, पन्नालाल बैद, विनोद बच्छावत (अणुव्रत समिति), मौनिका चोरड़िया, मनोज लुणिया (जैविभा), डॉ० कुसुम लुणिया, सभाध्यक्ष प्रकाश दुगड़, अशोक दुगड़ एवं तेरापंथ सभा और महिला मंडल ने गीत से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर ने गुरु धारणा करवाई। बैद परिवार को आशीर्वचन फरमाए।

मुनि धन्यकुमार जी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

दुर्लभ मनुष्य जीवन को अपने सद्आचरण से सुफल बनाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

बीदासर बाहर, ३ फरवरी, २०२२

अध्यात्म जगत के महासूर्य समता के सागर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने चाड़वास से विहार कर वीरभूमि बीदासर में मंगल पदार्पण किया।

वीरभूमि-तपोभूमि बीदासर जहाँ पूज्यप्रवर २०२२ का वृहद मर्यादा महोत्सव आयोज्य हैं। बीदासर के कई ऐतिहासिक प्रसंग धर्मसंघ से जुड़े हुए हैं। जहाँ आचार्यों की विशेष कृपा रही है, तो यहाँ के श्रावक भी संघनिष्ठ हुए हैं। बीदासर साध्वियों का सेवा केंद्र भी है।

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी इस सृष्टि में अनंत जीव हैं। ८४ लाख जीव योनियाँ बताई गई हैं। इन ८४ लाख जीव योनियों में मानव जन्म दुर्लभ बताया गया है। चार चीजें शास्त्र में दुर्लभ कही गई हैं—मनुष्य जन्म, श्रुति, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।

मनुष्य जन्म मिलना कठिन है। वह मिल भी जाए तो धर्म का श्रवण कर पाना मुश्किल है। श्रुति भी हो जाए तो श्रद्धा का होना दुर्लभ है। श्रद्धा हो जाने के बाद भी आदमी वो आचरण नहीं कर सकता।

प्रश्न हो सकता है कि मनुष्य जन्म दुर्लभ कहा है। आबादी बहुत है। आबादी को नियंत्रण में लाने की बात होती है। जैन धर्म के सिद्धांतों के संदर्भ में देखें तो जमीकंद है, एक छोटे से हिस्से में अत्यंत जीव हैं। ऐसे अनंत-अनंत जीवों की तुलना में तो मनुष्य कितने कम हैं। मनुष्यों से ज्यादा तो देव होते हैं। इसलिए इस संदर्भ में यह ठीक सिद्ध हो सकता है कि मनुष्य जन्म दुर्लभ है।

धर्म की बात को सुनना भी मुश्किल माना गया है। वर्तमान के यंत्रों में भी श्रुति को कुछ सुलभ बना दिया है। बीदासर में मर्यादा-महोत्सव करने आए हैं। सुलभ होने पर भी श्रुति को कोई ध्यान से सुनें तो समझ में आ सकता है। सुनकर श्रद्धा का हो जाना दुर्लभ है। धर्म के संदेश को जीवन में उतारना, पराक्रम करना और भी मुश्किल हो जाता है। अतीत में अनेक तीर्थंकर, संत हुए हैं, वर्तमान में भी हो रहे हैं।

कोई प्रश्न कर ले कि तीर्थंकर २४ ही क्यों होते हैं। सृष्टि का अपना नियम है। जैसे दिन-रात में २४ घंटें ही होते हैं। श्रद्धा के साथ पराक्रम होता है, तभी इतने तीर्थंकर-साधु दुनिया में होते हैं।

इस मनुष्य जीवन का उपयोग अच्छा हो। यह मानव जीवन एक वृक्ष है। इसके फल लगे तो यह सफल ओर सुफल हो सकता है। आचार्य सोमप्रभ सूरि ने बताया कि मानव जीवन रूपी वृक्ष के छः फल होते हैं। तीर्थंकर अध्यात्म के सबसे बड़े वेत्ता होते हैं।

गुरु की पर्युपासना करो। शुद्ध साधु हमारे गुरु हैं। बीदासर में इतनी चारित्रात्माओं का मर्यादा महोत्सव के निमित्त पधारना-एकत्रित होना विशेष बात है। संत-समागम हो रहा है। इस बार वृहद मर्यादा महोत्सव की तैयारी में हम लोग हैं। आचार्य मुख्य गुरु होते हैं।

प्राणियों के प्रति दया की भावना रखो। 'तुलसी दया न पारकी, दया आपकी होय। तू किण ने मारे नहीं, तने ना मारे कोय।' मैं किसी की सुख-शांति में बाधक न बन जाऊँ।

सुपात्र को दान दो। शुद्ध साधु को दान देना सुपात्रदान हो जाता है। गुणों के प्रति अनुराग करो। गुणों के प्रति प्रमोद भावना रखो। गुणों की पूजा करें। मानव जीवन रूपी वृक्ष के ये छः फल लगाने का प्रयास करना चाहिए। मनुष्य जन्म को इस प्रकार सार्थक बनाया जा सकता है।

पूज्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के तीन सूत्रों के बारे में समझाया। बीदासर में तो पूज्य मघवागणी जैसे जन्मे थे। सरदारशहर में उनका महाप्रयाण हुआ था। जयाचार्य जैसे गुरु उनको मिले। वे फरमाते थे कि मघजी तो पुण्यवान हैं। मघवागणी को वीतराग कल्प जैसा कहा गया है।

बीदासर में माताएँ भी विराजी हैं छोगाजी और वंदनाजी। साध्वीप्रमुखा गुलाबाजी एवं शासन स्तंभ मुनि घासीराम जी से जुड़े क्षेत्र हैं। साध्वीप्रमुखा गुलाबांजी तो हमारे धर्मसंघ में सबसे छोटी उम्र में दीक्षा लेने वाली साध्वीश्री जी भी यहीं से थी। आचार्य और साध्वीप्रमुखा देने वाला क्षेत्र है। हमारा यहाँ मर्यादा महोत्सव के निमित्त आना शुभ रहे, यह कामना।

अमृत वाणी को सेवा देने वाले जयसिंह व उनका पुत्र अमरसिंह भी सेवा दे रहे हैं। नगरपालिका अध्यक्ष सीताराम प्रजापति ने नगर की ओर से पूज्यप्रवर का स्वागत किया। स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल गीत, जैविभा अध्यक्ष मनोज लुणिया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि ये जो फोटोग्राफर कमल शर्मा सेवा दे रहा है, वो अगर गुरुदेव तुलसी का सपना पूरा हो जाता तो आज यह शिष्य के रूप में सेवा दे रहा होता।

जिसका मन धर्म में रमा हो उसे देवता भी नमस्कार...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

तप भी धर्म है। तपस्या में तेज होता है। शुभ योग अपने आपमें तप होता है। अहिंसा, संयम और तप धर्म मंगल है। देव भी उसको नमस्कार करते हैं, जिसका मन धर्म में रमा रहता है।

आज मैंने अपने चारित्रात्माओं के साथ, साधु-साध्वी समुदाय के साथ बीदासर के प्रवास स्थल में मर्यादा महोत्सव के संदर्भ में प्रवेश किया है। मर्यादा महोत्सव हमारे धर्मसंघ का एक वार्षिक महोत्सव होता है, उसका अपना महत्त्व है।

आचार्य भिक्षु द्वारा प्रवर्तित जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ हमारा आश्रय है, हम इसमें रह रहे हैं। इसे नंदन वन कहा गया है। आचार्य भिक्षु की उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा आगे बढ़ी है। प्रज्ञापुरुष श्रीमद् जयाचार्य ने यह मर्यादा महोत्सव का क्रम प्रारंभ किया था। हमारे अतीत के दस आचार्य हमारे पूजनीय-वंदनीय हैं।

आचार्य तुलसी द्वारा निर्मित यह समण श्रेणी भी त्याग और संयम से जुड़ी हुई है। मुमुक्षु बाईयाँ और श्रावक-श्राविकाएँ भी हैं। अनेक संस्थाएँ धर्मसंघ से संबद्ध है।

परमपूज्य मघवागणी हमारे धर्मसंघ के पंचम आचार्य जिनको वीतराग-कल्प के रूप में स्वीकार किया गया है, ऐसे आचार्य की जन्मभूमि में हम लोग आज यहाँ प्रविष्ठ हुए हैं। महासती गुलाबांजी, मातुश्री छोगांजी, वंदनाजी, महासती लाडांजी से जुड़ा हुआ बीदासर क्षेत्र है।

इस बार का मर्यादा महोत्सव, वृहद् मर्यादा महोत्सव है। कितने साधु-साध्वियाँ यहाँ पहुँचे हैं। धर्मसंघ से मिलने का मौका आया है। शासनमाता साध्वीप्रमुखाजी, मुख्य नियोजिकाजी, साध्वीवर्याजी, मुख्य मुनि आदि चारित्रात्माएँ व समण श्रेणी पधारे हैं।

हमारा धर्मसंघ जैन शासन का ही एक अंग है। हमारा सौभाग्य है कि हमें ऐसा धर्मसंघ प्राप्त हुआ है, जिसमें सुरम्यता है, शोभा भी है। भिक्षु स्वामी ने क्रांति की और एक नया संप्रदाय संपादित हो गया, संपुष्ट हो गया। इतने हमारे श्रावक-श्राविकाएँ जो जगह-जगह प्रवास करने वाले हैं।

हमारे धर्मसंघ में मर्यादाओं का महत्त्व है। मर्यादा अपने आपमें सुरक्षा कवच के रूप में होती है। हम मर्यादा का सम्मान करें तो मर्यादा हमारी सुरक्षा कर सकेगी। मर्यादा महोत्सव का सम्यक्तया आयोजन हो। सभी जागरूकता बनाए रखें, यह काम्य है। मैं हमारे सभी पूर्वाचार्यों का स्मरण-वंदन करता हुआ मंगल प्रवेश पर यह मंगलकामना करता है कि हमारा उद्देश्य है, मर्यादा महोत्सव को समायोजित करना, वह लक्ष्य का सम्यक्त्व संपन्न हो। शुभाशंसा।

बीदासर कई चारित्रात्माओं का जन्म स्थल, दीक्षा भूमि या चाकरी स्थल है, उनमें सभी में आध्यात्मिक साधना-संस्कार बने रहें।

समाधि केंद्र बीदासर की व्यवस्थापिका साध्वी कार्तिकयशाजी, तपस्वी मुनि नमि कुमार जी, साध्वी अमितप्रभाजी, मुनि धन्यकुमार जी, साध्वी अनन्यप्रभा जी, मुनि मुदितकुमार जी, साध्वी परमयशाजी ने अपनी भावना परमपूज्य के स्वागत-अभिनंदन में अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने मुनि नमिकुमार जी को ३१ की तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाते हुए कहा कि तपस्वी को नजर नहीं लगे।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ सभाध्यक्ष अशोक बोथरा, नवीन बांठिया (तेयुप अध्यक्ष), तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष चंदा देवी गिड़िया, स्वागताध्यक्ष भीकमचंद बैंगाणी, व्यवस्था समिति अध्यक्ष कन्हैयालाल गिड़िया, तेरापंथ कन्या मंडल, तेरापंथ समाज, रूपचंद दुगड़, मीता डागा, ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों द्वारा गीत, प्रस्तुति व भावों से अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

श्री चरणों में अर्पण

● **मुनि कमल कुमार** ●

माँ नेमां ने ऐसा समर्पित किया श्रीचरणों में अपना लाल
जिनका देदीप्यमान चहरा और आकर्षक चमक रहा है भाल
जिनके व्यक्तित्व और कर्तृत्व से प्रसन्न हुए श्री तुलसी पाल
मुदित से महाश्रमण बनाकर बना गये धर्मसंघ की ढ़ाल।

जब गुरुदेव तुलसी अकस्मात कर गये गंगाशहर में काल
तब आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने उत्तराधिकारी घोषित कर दिया तत्काल
जिनके कुशल नेतृत्व में केवल संघ ही नहीं सब हो रहे हैं निहाल
जिनके उदात्त चिंतन धर्मसंघ को बना दिया गगन ज्यों विशाल।।

एक साथ पूर्वांचल दक्षिणांचल का स्पर्श कर दिया सबको मालामाल
जिनकी अमृतमय वाणी मानो समयानुकूल और है मधुररसाल
जिसको श्रद्धामय आसेवन करने वाला काट देता है जग जंजाल
ऐसे शांतिदूत महातपस्वी आचार्य को पाकर सब तरह से हैं खुशहाल
युगप्रधान आचार्य के दर्शकर समुद्र में ज्वार की तरह हर्ष तरंगें रही हैं उछाल।।

गणतंत्र दिवस पर कार्यक्रम

जयपुर।

अणुव्रत समिति द्वारा गणतंत्र दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इंडस्ट्रीयलिस्ट एल०एन० बांगुर थे। उन्होंने कोविड महामारी की विषम परिस्थितियों में भी जुझारू ३६ कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया तथा १० बच्चों को सम्मानित किया जो ऑनलाइन कक्षाओं में लगातार उपस्थित रहे।

उन्होंने इन परिस्थितियों में बढ़ती अणुव्रत की प्रासंगिकता पर विशेष जोर दिया। जीवन-विज्ञान और प्रेक्षाध्यान की उपयोगिता विद्यार्थी के स्वयं के जीवन में और उसके संपूर्ण परिवार के लिए इसकी अभूतपूर्व आवश्यकता को समझाया।

अर्हम्

● **साध्वी प्रतीकप्रभा** ●

भैक्षव शासन नंदन वन में, त्योहार मनाएँ हो।
अमृत मोच्छव प्रमुखा पद का, अमृत रस बरसाए हो।
जन-जन हरसाए हो।।आ०।।

गुरु महाश्रमण कृपा कराई, स्वर्णिम दिन बगसाया।
चंद्रकात मणि चंदेरी में, कनकप्रभा फैलाए हो।।

हो ममतामयी माँ तुम, नारी जाति की शान हो।
तेरे उपकारों की क्या? महिमा बतलाए हो।।

गुरु भक्ति, संघ भक्ति से, सुर नर नत मस्तक है।
गुरु तुलसी की कृति मनोहर, गण गौरव बढ़ाएँ हो।।

विरल विलक्षण वत्सलता, मधुरी वाणी मन मोहे।
असाधारण साध्वीप्रमुखा, नव इतिहास रचाए हो।।

चयन दिवस की स्वर्ण जयंति, चिहुं ओर खुशियाँ हैं।
कोड़ दिवाली राज करो तुम, आरोग्य बोहि लाभ वरो तुम।
हम सबकी दुआएँ हो।।

लय : प्रभु पार्श्व देव---

भूल-सुधार

अंक १७ में पेज ३ पर पूज्यप्रवर ने नामकरण संस्कार में नामों को इस प्रकार पढ़ें—

समणी रुचिप्रज्ञा—साध्वी रुचिरप्रभा
समणी मनस्विप्रज्ञा—साध्वी महकप्रभा

सेवा की भावना हमारे धर्मसंघ के लिए मंगलकारी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हमारे यहाँ सेवा के केंद्र भी बने हुए हैं। आज तो सेवा केंद्र में बैठकर सेवा की बात कर रहे हैं। यह एक विरल मौका है—समाधि केंद्र में सेवा की बात करना। अक्षम जो है, उनको सेवा देने वाला मिल जाए तो कितनी शांति मिलती है। सेवा केंद्रों में हर साल सेवादायी की नियुक्ति की जाती है।

सेवा केंद्रों में सबसे प्राचीन सेवा केंद्र तो लाडनूं साध्वियों का ठिकाना है। सेवा केंद्र एक तरह के तीर्थ हैं। साध्वी प्रबलयशाजी इस लाडनूं साध्वी केंद्र में सेवा देने की वंदना करे। समाधि केंद्र बीदासर में साध्वी सुदर्शनाश्री जी सेवा देने की वंदना करें। श्रीडूंगरगढ़ सेवा केंद्र में साध्वी चरितार्थप्रभा जी सेवा देने की वंदना करें। ये तो वाइस चांसलर रही हुई हैं। विदेश यात्रा भी की हुई है। समणी नियोजिका भी पहले बनाया था। गंगाशहर सेवा केंद्र में साध्वी कीर्तिलताजी सेवा देने की वंदना करें।

सेवाग्राही को शारीरिक सेवा के साथ मानसिक सेवा-चित्त समाधि मिले, ऐसा हमारा व्यवहार हो। सम्मानपूर्वक उचित सेवा उन्हें मिले। हिसार सेवा उपकेंद्र में साध्वी लब्धिप्रभाजी सेवा देने की वंदना करें। सेवादायी सिंघाड़ों को एवं सेवाग्राहियों के लिए भी पूज्यप्रवर ने प्रेरणा फरमायी। सेवा के साथ स्वाध्याय जप चलता रहे। ध्यान भी करें। जहाँ तक हो सेवाग्राही भी स्वयं की निर्जरा जितनी हो सके, करते रहें। सेवा देने वाले तो तैयार रहते ही हैं।

कम से कम लो, अधिक से अधिक दो, सेवा धर्म, विचार।
रखो सभी के साथ में, प्रतिपल शिष्टाचार।।

साधुओं के सेवा केंद्र में छापर सेवा केंद्र पुराना है। वहाँ मुनि पृथ्वीराज जी सेवा दे रहे हैं, आगामी सत्र में भी दायित्व मुनि पृथ्वीराज जी संभालें। दूसरा सेवा केंद्र जैविभा में है, वहाँ सेवा देने के लिए मुनि विजय कुमार जी स्वामी की नियुक्ति की जाती है।

प्रकृति से प्रतिकूल को भी अपने पास रखना सेवा है। हमारी सेवा की भावना पुष्ट रहे। हम दूसरों के लिए समाधि के निमित्त बन सकें। समाधि ज्यादा तो अपने हाथ में ही है। स्वयं का सकारात्मक चिंतन है, समता है, तो दूसरा कुछ भी कहे। जहाँ अपेक्षा हो वहाँ सेवा करने भेजो वो और ज्यादा ऊँची बात होती है।

आज बसंत पंचमी का दिन, मर्यादा महोत्सव का प्रथम दिन है। उसमें सेवा केंद्रों की व्यवस्था हुई है। गुरुदेव तुलसी को देखा है, कैसे वो सेवा फरमाते थे। साध्वीप्रमुखाश्रीजी भी साध्वी समुदाय की व्यवस्था के रूप में कितनी सेवा कर रही है। मुझे संतोष है कि आप इतना श्रम करा रही हैं। आप लंबे काल तक सक्रियता से सेवा देती रहे। ऐसी मंगलकामना है।

आज हमारे शासन गौरव साध्वी राजीमती जी भी पधार गई हैं। बहुश्रुत परिषद के सात सदस्यों में से छः यहाँ पर हैं। ऐसा भी विरल मौका है। हम सभी में सेवा की भावना पुष्ट हो। स्वास्थ्य भी अच्छा रहे। शासन की सेवा करने का प्रयास करते रहें।

साध्वियाँ धर्मोपकरणों का निर्माण करती रहती है, यह भी एक सेवा है। साध्वी राजीमती जी ने धर्मोपकरण श्रीचरणों में उपस्थित किए। साध्वी राजीमती जी वरिष्ठ साध्वीजी हैं। शासनश्री साध्वी कनकश्रीजी को भी शासन गौरव का अलंकरण दिया जा रहा है। शासन गौरव तीन साध्वियाँ हो गई हैं—शासन गौरव साध्वी राजीमतीजी, साध्वी कनकश्रीजी एवं साध्वी कल्पलता जी।

बीदासर के मुनि नमि कुमार जी ने ३२ की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर से ग्रहण किए। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित जयतिथि पत्रक का विमोचन पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अर्पित किया गया। मित्र परिषद कलकत्ता द्वारा प्रकाशित तिथि दर्पण एवं तिथि पत्रक पूज्यप्रवर को समर्पित किया। महासभा के अध्यक्ष ने शिशु संस्कार भाग-२ श्रीचरणों में अर्पित किया। जैन भारती विशेषांक भी समर्पित किया गया।

पूज्यप्रवर ने जयतिथि पत्रक व तिथि दर्पण के विमोचन पर आशीर्वचन फरमाया। जैन भारती व शिशु संस्कार बोध के लिए भी आशीर्वचन फरमाया कि इनका अच्छा उपयोग होता रहे।

उपासक श्रेणी द्वारा सुमधुर गीत—'गुरुदेव हमें अच्छे संस्कार चाहिए' का संगान किया गया।

शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अपने भावों के उद्गार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 - 20 फरवरी, 2022

✦ *तर्क के द्वारा ज्ञान को वृद्धिंगत किया जा सकता है, इसलिए विद्वत्ता को बढ़ाने के लिए तर्कशक्ति का विकास आवश्यक है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

विजयनगर।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा अमृत सिंचन कार्यक्रम के अंतर्गत भाषण प्रतियोगिता का तथा साध्वीप्रमुखाश्री जी के जीवन पर दृश्यांकन कार्यक्रम का आयोजन ३ चरण में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंडल की परामर्शकर्ता भंवरी बाई कोठारी द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ किया गया। मंगलाचरण मंडल द्वारा प्राणी समकित पुरानी गीतिका से किया गया। मंडल की अध्यक्ष प्रेम भंसाली ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सभी का स्वागत किया।

प्रथम चरण में ६ भावनाओं पर आधारित लेखन प्रतियोगिता के परिणाम घोषित किए। प्रतियोगिता की संयोजिका अभातेममं की पूर्व महामंत्री वीणा बैद रही। लगभग १५ प्रतिभागियों ने लेखन प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगिता की निर्णायक वीणा बैद ने प्रथम महिमा पटावरी, द्वितीय सभा उपाध्यक्ष राकेश दुधेड़िया एवं तृतीय कन्या मंडल की मुस्कान घोषल एवं राणू बरड़िया रहे।

दूसरे चरण में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिसमें प्रमुख निर्णायक के रूप में अभातेममं की पूर्व महामंत्री वीणा बैद तथा प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षिका उर्मिला सुराणा रहे। पूरी प्रमाणिकता के साथ दोनों जजों ने अपने निर्णय सुनाए, उपाध्यक्ष मंजु गादिया ने प्रतियोगिता के निर्णायकों का परिचय दिया। भाषण प्रतियोगिता में लगभग २२ प्रतियोगियों ने भाग लिया। प्रथम मुस्कान घोषल, द्वितीय रेखा छाजेड़ एवं तृतीय बरखा पुगलिया रही।

तृतीय चरण में असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के जीवन पर दृश्यांकन मंडल की बहनों द्वारा किया गया। कार्यक्रम में ६० बहनों व कन्याओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम की संयोजिका, उपाध्यक्ष महिमा पटावरी ने किया। सभी का आभार प्रचार-प्रसार मंत्री किरण बोराणा ने किया। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वाले प्रतियोगियों को मंडल द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी को सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

लेखन प्रतियोगिता के प्रायोजक रहे शांतिलाल बाबेल परिवार, भाषण प्रतियोगिता के प्रायोजक कमला बाई दुधोड़िया परिवार रहे। कार्यक्रम का संचालन कर्नाटक प्रभारी मधु कटारिया ने किया तथा अपनी मंगलभावना व्यक्त की।

संगठन यात्रा

मुंबई।

महिला मंडल व कन्या मंडल की परिचर्या संगठन यात्रा (सार-संभाल) संपन्न हुई। सर्वप्रथम उरण क्षेत्र से इस यात्रा का भव्य आगाज हुआ उसके पश्चात मुंबई के ४६ उपनगरों में जिसमें पनवेल, खारघर, ऐरोली, कोपरखेरने, वाशी, नेरुल, बेलापुर, मुलुंड, ठाणे (कोपरी, वागले स्टेट, सेंट्रल), मीरारोड, भायंदर, वसई, विरार, नालासोपारा, भिवंडी, घाटकोपर, कुर्ला, जूना कुर्ला, एमडीडब्ल्यूएस, भांडुप, कांजुरमार्ग, पार्क साइट, सायन कोलीवाड़ा, चेंबूर, गोवंडी, एल्फिस्टन, दादर, कांदिवली, मालाड़, गोरेगाँव, बांगुर नगर, जोगेश्वरी, बदलापुर, उल्हासनगर, डोंबीवली, बोरीवली, दहिसर, दक्षिण मुंबई, बांद्रा, सांताक्रुज, विलेपार्ले, खार व साकीनाका इन सभी क्षेत्र में हुई।

तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई के अध्यक्ष रचना हिरण, मंत्री अल्का मेहता, पूर्वाध्यक्ष प्रेमलता सिसोदिया, कुमुद कच्छारा, निवर्तमान महामंत्री तरुणा बोहरा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों का सहयोग प्राप्त हुआ।

अध्यक्ष रचना व मंत्री अल्का ने मन की बात कहते हुए संगठन के महत्त्व व संगठन यात्रा का मुख्य उद्देश्य के बारे में जानकारी दी। साध्वीप्रमुखाश्री जी के ५०वें मनोनयन दिवस पर उनके जीवनी से जुड़े कुछ पहलू नाट्य व शब्दचित्र के माध्यम से महिला मंडल व कन्या मंडल की बहनों ने प्रस्तुति दी।

कन्या मंडल प्रभारी, सह-प्रभारी ने कन्याओं का प्रोत्साहन बढ़ाया व अध्यात्म के साथ जुड़कर जागरूकता से हर पड़ाव को पार करने के लिए प्रेरित किया। इस संगठन यात्रा में सभी पूर्वाध्यक्ष, कार्यकारिणी सदस्य, विशेष सहयोगी सदस्य, सभी संयोजिका व सह-संयोजिका का सहयोग मिला। सभी के प्रति महिला मंडल ने आभार व्यक्त किया।

कषाय विजय कार्यशाला तथा श्रावक सम्मेलन का आयोजन

राजलदेसर।

साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में नव वर्ष २०२२ का कार्यक्रम एवं कषाय विजय कार्यशाला तथा श्रावक सम्मेलन का आयोजन किया गया। अभातेममं द्वारा निर्देशित राजलदेसर तेरापंथ महिला मंडल द्वारा आयोजित कार्यक्रम में साध्वी डॉ० परमयशा जी ने नमस्कार महामंत्र का संगान कर सर्वप्रथम हाजिरी का वाचन किया। तत्पश्चात महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। साध्वीश्री जी ने अपना उद्बोधन दिया।

साध्वीश्रीजी ने कहा कि हमारी अशांति का मूल कारण क्रोध है। क्रोध क्यों आता है? क्रोध से क्या नुकसान हो सकते हैं? क्रोध पर विजय कैसे प्राप्त कर सकते हैं, आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा करते हुए क्रोध के कारण और निवारण के अनेक उपाय बताए।

कार्यक्रम में साध्वी धर्मयशाजी ने नव वर्ष के उपलक्ष्य में कविता के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी विनम्रयशा जी ने उपस्थित जनमेदिनी को नए-नए संकल्प ग्रहण करने की प्रेरणा दी। साध्वी मुक्ताप्रभाजी ने कविता के माध्यम से नववर्ष पर सबको अपनी मंगलभावनाएँ प्रेषित की। साध्वी कुमुदप्रभा जी ने हैप्पी न्यू ईयर-२०२२ पर बेस्ट विशेज का हैप्पी मैसेज इंग्लिश स्पीच से देकर सबको हैप्पी रहने का संदेश दिया।

कार्यक्रम में महिला मंडल द्वारा कषाय विजय कार्यशाला 'क्रोध को करें गेट आउट' की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा ज्ञानवर्धक रोचक कार्यक्रम के माध्यम से न्यू ईयर की शुभकामनाएँ दी गई। इस अवसर पर साध्वी परिवार द्वारा मधुर लहरी के साथ गीत का संगान किया गया।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष नवरत्नमल बैद 'मूथा' द्वारा सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ दी गई एवं श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया। महिला मंडल ने मंगलभावना गीत के माध्यम से मंगलकामनाएँ की।

इस अवसर पर गरीब अनाथ बच्चों को भोजन एवं स्टेशनरी सामग्री का वितरण किया गया।

दृश्यांकन एवं भाषण प्रतियोगिता कार्यशाला का आयोजन

डी०वी० कॉलोनी, हैदराबाद।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन मे साध्वीप्रमुखाश्रीजी के जीवन पर आधारित दृश्यांकन एवं भाषण प्रतियोगिता कार्यशाला का आयोजन किया गया। चैतन्य रश्मि पर आधारित, साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के ५०वें मनोनयन दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित अमृत महोत्सव पुस्तक प्रतियोगिता पर रखी गई।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। मंडल की बहनों ने मंगलाचरण का सुरसंगान किया। अध्यक्ष अनीता गिड़िया ने सभी का स्वागत किया। इसी कड़ी में कार्यक्रम में पधारे मुख्य निर्णायक लक्ष्मीपत बैद और तेरापंथ सभा के सहमंत्री राकेश सुराणा ने महिला मंडल को संघीय कार्यक्रम करने की प्रशंसा और शुभकामनाएँ दी। पूर्व अध्यक्ष प्रेम पारख, सरोज भंडारी, रीता सुराणा, कन्या मंडल प्रभारी निशा पींचा ने अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में श्रमणीवरम के प्रति अपनी विषय प्रस्तुति दी।

प्रमुखाश्रीजी के जीवन को बहनों ने बहुत ही शालीनता और रोचकता से प्रस्तुत किया। प्रस्तुति देने वाली बहनें–कीर्ति सिंघी, सुप्रिया बैद, शकुंतला बुच्चा, मनीषा सिंघी, समता डोसी, आकांक्षा, मोनिका नाहटा, विधि जैन, प्रतीक्षा डागा, श्रेया बोरा, खुशाल पींचा, गीतिका नाहटा रहीं। हर्षलता दुधोड़िया का इसमें अच्छा श्रम नियोजन रहा।

भाषण प्रतियोगिता में शांता बैद, राजुल दुगड़, चंदन कोठारी, सुप्रिया बैद, मैत्री सुराणा, मोक्षा सुराणा, विधि जैन, हेमा, रेखा सकलेचा आदि बहनों ने भाग लिया। सभी बहनों ने प्रमुखाश्रीजी की जीवनी पर अपने वक्तव्य में प्रकाश डाला। इसमें प्रथम स्थान राजुल दुगड़, द्वितीय शांता बैद, तृतीय मैत्री सुराणा का रहा। मंडल की ओर से पुरस्कार एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए। निर्णायकगण का पंचरंगी पट्टे द्वारा मंडल की बहनों ने सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन हर्षलता दुधोड़िया, कविता आच्छा ने किया। कन्या मंडल की प्रार्थना सुराणा, कुंजल बोथरा का सहयोग रहा। अल्पाहार की व्यवस्था की गई। बहनों की अच्छी उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन मंत्री श्वेता सेठिया ने किया।

आहार कार्यशाला का आयोजन

मैसूर।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, मैसूर के तत्त्वावधान में रूपांतर थ्रू जैनिज़्म के अंतर्गत आहार विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की कार्यकारिणी सदस्य लक्ष्मी भटेवरा के द्वारा मंगलाचरण से हुआ। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा मंजु दक ने सभी वक्ता तथा बहनों का स्वागत किया एवं आहार विषय के बारे में अपने विचार व्यक्त किए।

महिला मंडल की ४ बहनों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। सोनल कोठारी, सीमा देरासरिया, महिला मंडल की वरिष्ठ उपाध्यक्ष इंदु पितलिया एवं रेखा पितलिया सभी बहनों ने अलग-अलग पॉइंट पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन रचना देरासरिया ने किया एवं आभार महिला मंडल की उपाध्यक्ष अनीता कटारिया द्वारा किया गया।

✦ *चारित्र की आराधना से मन, वचन एवं काया का संयम स्वतः हो जाता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000

आचार्य भारमलजी के २००वीं निर्वाण शताब्दी पर कार्यक्रम

हिरियूर।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में साध्वी प्रमिलाकुमारी जी के सान्निध्य में आचार्य भारमलजी के २००वीं निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष्य में तथा साध्वी प्रमिलाकुमारी आदि साध्वियों के हिरियूर पधारने के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा मंत्रोच्चारण से हुआ। सर्वप्रथम चिरायु चौपड़ा ने मंगलाचरण किया। तत्पश्चात हिरियूर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष दीपचंद चौपड़ा, उत्तर कर्नाटक प्रांत के अध्यक्ष जयंतीलाल चौपड़ा, उत्तर कर्नाटक प्रांत के मंत्री पुष्पराज बाफणा और तेरापंथ महिला मंडल, हिरियूर की मंत्री लक्ष्मीदेवी ने साध्वीश्री जी एवं सभी आगंतुकों का स्वागत करते हुए आचार्य भारमलजी के प्रति अपने-अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

इस अवसर पर विजयनगर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष राजेश चावत, वरिष्ठ उपाध्यक्ष राकेश दुधोड़िया एवं विजयनगर महिला मंडल की मंत्री सुमित्रा बरड़िया ने भी आचार्य भारमल जी का गुणानुवाद किया। विजयनगर से आए सभी श्रावक-श्राविकाओं ने मिलकर गीत के माध्यम से साध्वीश्री को उनकी आगे की यात्रा के लिए मंगलभावना व्यक्त की।

साध्वी आस्थाश्री जी एवं साध्वी विज्ञप्रभाजी ने भी इस अवसर पर 'इतिहास के आलोक में समर्पण की झाँकी' कार्यक्रम के माध्यम से आचार्य भारमलजी के जीवन के विविध घटना प्रसंगों को उजागर किया। साध्वी प्रमिलाकुमारी जी ने कहा कि महान पुरुषों की जन्म व निर्माण शताब्दी इसलिए मनाई जाती है क्योंकि वे हमारे आदर्श हैं, उनके जीवन चरित्र को सुनने व पढ़ने से पुरानी संस्कृति की जानकारी होती है। संस्कार उजागर हो जाते हैं।

साध्वीश्री जी ने प्रसंगों के द्वारा उनके चारित्रिक विशेषताओं का चित्रण किया और बताया कि आचार्य भारमलजी अपने गुरु के परम भक्त व धर्मशासन के लिए कुशल अनुशास्ता थे। आज का दिन उस महान व्यक्तित्व के गुणगान का एवं उनके गुणों को स्वयं के जीवन में उतारकर, जीवन को महकाने का दिन है। कार्यक्रम का संचालन देवराज चौपड़ा द्वारा किया गया।

दो दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

सिरकाली (तमिलनाडु)।

आज दुनिया प्रगति के अमाप्य सपने देख रही है, हर व्यक्ति विकास के अनछूए पहलुओं को छूना चाहता है। इस पर लक्ष्य प्राप्ति की भाग-दौड़ ने उसके मानसिक, शारीरिक एवं भावनात्मक रूप को अत्यधिक प्रभावित किया है। यह विचार एस०एस जैन संघ, सिरकाली में तेरापंथ सभा द्वारा दो दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर के उद्घाटन समारोह में मुनि अर्हत कुमार जी ने कहे।

मुनिश्री ने आगे कहा कि आज विज्ञान ने कितनी क्रांति कर दिखाई है। अपने घर की चार दीवारों से निकल, आज का इंसान पाँच महाद्वीपों की यात्रा करने लगा है। जिस हिसाब से साइंस टेक्नोलॉजी बढ़ रही है, उससे लगता है संसार का बाह्य ढाँचा काफी बदल जाएगा। समस्याओं से आवर्त इस संसार को समाधान की एक नई राह दिखाने के लिए परमपूज्य गुरुदेवश्री महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षाध्यान का आविष्कार किया। प्रेक्षाध्यान वह समरीन है, जो हमें अनंत सुखों की गहराई में ले जाता है। प्रेक्षाध्यान का अर्थ है स्वयं की प्रेक्षा, आत्मा का सूक्ष्म निरीक्षण। प्रेक्षाध्यान स्वयं को स्वयं से जोड़ने का एक सेतु है। हमें प्रेक्षाध्यान के आयामों से जुड़कर जीवन के निर्माण के साथ आत्मा का कल्याण करना चाहिए।

मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि जो नियमित करता है प्रेक्षाध्यान, आत्मा भिन्न शरीर भिन्न का होता है भान, उसकी आत्मा में जग जाता है ज्ञान, कर्म रूपी ईंधन को जला वह बन जाता है भगवान। प्रेक्षाध्यान के अनेकों प्रयोग व रोचक प्रतियोगिताएँ करवाई, जिससे साधकों में रुचि व उत्साह बढ़ गया। बाल संत जयदीप कुमार जी ने कहा कि ध्यान वह दूरबीन है, जो परमात्मा का दर्शन कराता है एवं आत्मा से आत्मा का स्पर्श कराता है। हमें ध्यान का नित्य प्रयोग करना चाहिए। कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री द्वारा नवकार महामंत्र से हुई। तत्पश्चात महिला मंडल ने प्रेक्षाध्यान गीत का संगान किया।

युवक रत्न ज्ञानचंद आंचलिया ने स्वागत भाषण में कहा—गुरुदेव की महत्ती कृपा से हमें मुनिश्री का मंगल सान्निध्य प्राप्त हुआ। मुनिश्री की प्रेरणा से प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन हुआ है। आभार ज्ञापन स्थानकवासी समाज के मंत्री धनराज चौधरी ने किया। प्रेक्षाध्यान शिविर में तेरापंथ धर्मसंघ, स्थानकवासी समाज एवं सर्वसमाज के लगभग १५० लोग लाभान्वित हो रहे हैं।

आचार्य तुलसी चिकित्सालय का शुभारंभ

उधना।

लाजपुर सेंट्रल जेल (सूरत) में जेल स्टॉफ परिवार के स्वास्थ्य कल्याण के अर्थ में 'स्टॉफ डिस्पेंसरी' (आचार्य तुलसी चिकित्सालय) का शुभारंभ डॉ० के०एल०एन० राव (आईपीएस) व मनोज निनामा (अधीक्षक लाजपुर सेंट्रल जेल, सूरत) व जेल के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में संस्कारक संजय बोथरा, अरुण चंडालिया, विकास कोठारी, सुनील चंडालिया, सुभाष चपलोत द्वारा जैन संस्कार विधि से किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामुहिक उच्चारण से हुई। सभा अध्यक्ष पारसमल बाफना ने उद्गार व्यक्त किए। परिषद अध्यक्ष मनीष दक ने सभी का स्वागत किया। जेल अधिकारी नरवणे साहिब ने अपने वक्तव्य में जेल परिसर में पधारे सभी का स्वागत करते हुए तेयुप का आभार प्रकट किया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा, तेयुप, किशोर मंडल, सचिन परिषद के सभी पदाधिकारी व सदस्य उपस्थित रहे। सभी अधिकारियों का शॉल व साहित्य्य से सम्मान किया गया। अंत में आभार तेयुप मंत्री गौतम आंचलिया ने किया।

धम्म जागरण का आयोजन

एरोली।

शासनश्री साध्वी कैलाशवती जी के सान्निध्य में विशेष भक्ति का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। तत्पश्चात तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष धीरज बोहरा ने पधारे हुए सभी भक्तजनों का स्वागत करते हुए गीतिका के साथ कार्यक्रम शुरू किया।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, तेयुप, तेमम एवं किशोर मंडल के सभी कार्यकर्ता एवं तेरापंथ समाज के सम्मानित सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही। भक्ति में एरोली में विराजित साध्वी कैलाशवती जी की विशेष प्रेरणा रही।

साध्वी पंकजश्रीजी ने सभी की सराहना करते हुए स्वरचित गीतिका से माहौल भक्तिमय बना दिया। तेयुप के भिक्षु भक्ति मंडल प्रभारी देवेंद्र बोहरा ने पधारे हुए सभी महानुभावों का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन धीरज बोहरा द्वारा किया गया।

✦ *यदि जीवन में अहिंसा की साधना का अभ्यास हो, इंद्रिय, वाणी और भोजन आदि का संयम हो तथा शुभयोग रहे तो व्यक्ति अच्छा बन सकता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

पाणिग्रहण संस्कार

लाडनूं।

तेरापंथ की राजधानी स्थित ओसवाल पंचायत भवन में बसंत पंचमी के पावन दिवस पर लाडनूं निवासी-दिल्ली प्रवासी मूलचंद-कमला देवी डागा के सुपुत्र पंकज का शुभ पाणिग्रहण संस्कार श्रीडूंगरगढ़ निवासी, रायपुर प्रवासी हंसराज-हर्षा बाफना की सुपुत्री प्रेक्षा के साथ जैन संस्कार विधि से परिसंपन्न हुआ। उल्लेखनीय है कि संस्कारकद्वय विमल गुनेचा व इंद्र बैंगाणी ने पूरे विधिविधान से इस विवाह संस्कार को दिल्ली से लाडनूं जाकर परिसंपन्न करवाया।

इस अवसर पर महासभा का०स० सदस्य तेजकरण बोथरा, स्थानीय सभा के कार्यकारी अध्यक्ष संपतराज डागा, तेयुप जयपुर उपाध्यक्ष 'द्वितीय' सुनील लुणिया, तेयुप लाडनूं अध्यक्ष संजय मोदी, मंत्री रोनक घोषल, सहमंत्री विकास रुणीवाल, कोषाध्यक्ष सुमित मोदी, संगठन मंत्री तरुण कठोतिया सहित समाज के गणमान्य व्यक्ति व पारिवारिकजन उपस्थित थे। तत्पश्चात नवदंपति, संस्कारद्वय व पारिवारिकजनों ने सेवाकेंद्र में साध्वी प्रज्ञावती जी आदि साध्वियों के दर्शन किए एवं मंगलपाठ श्रवण कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

नामकरण संस्कार

हैदराबाद।

हैदराबाद प्रवासी बेगराज पटावरी की पड़पौत्री, प्रकाश-प्रेम पटावरी की सुपौत्री, विकास-कोमल पटावरी की पुत्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान से हुआ। जैन संस्कारक ललित लुनिया ने परिषद की ओर से पारिवारिकजनों को मंगलभावना भेंट कर बधाई दी। सेवा प्रकोष्ठ सदस्य राकेश धाड़ेवा एवं तेयुप मंत्री वीरेंद्र घोषल ने शुभकामनाएँ प्रेषित की।

नामकरण संस्कार

हैदराबाद।

गंगाशहर निवासी, हैदराबाद प्रवासी सुशील-किरण देवी छाजेड़ की पौत्री अभिषेक-मोनिका छाजेड़ की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान से हुआ। जैन संस्कारक आशीष दक, ललित लुनिया ने परिषद की ओर से पारिवारिकजनों को मंगलभावना भेंट कर बधाई दी।

नामकरण संस्कार

हिंदमोटर।

मलसीसर निवासी, नवगाँव प्रवासी विकास-सुचिता सुराणा के पुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संपत समता गिड़िया के निवास स्थान पर हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार महामंत्र एवं परमेष्ठि वंदना के संगान के साथ हुआ। अभातेयुप संस्कारक पवन बैंगानी एवं जैन संस्कार विधि के राज्य प्रभारी प्रवीण सिंघी ने पूर्ण मंत्रोच्चार से पूजन का कार्यक्रम संचालित किया।

तेयुप हिंदमोटर के संस्थापक अध्यक्ष लूणकरण मालू ने शुभकामनाएँ दी। मंत्री पंकज बैद ने संपूर्ण परिवार एवं संस्कारकों का आभार प्रकट किया।

सुराणा परिवार की ओर से उनकी सुपुत्री राजलक्ष्मी बांठिया ने उपस्थित जनों के तिलक लगाकर स्वागत किया। कमल सुराणा एवं संपतमल गिड़िया, तेमम की अध्यक्षा समता गिड़िया ने तेयुप हिंदमोटर और दोनों संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया।

विवाह संस्कार

गंगाशहर।

सरदारशहर निवासी राजकुमार श्यामसुखा की सुपुत्री मुक्ता का शुभ विवाह लाडनूं निवासी जयसिंह बांठिया के सुपुत्र महावीर के साथ सरदारशहर में जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। अभातेयुप संस्कारक रतनलाल छलाणी, गोपाल लुणावत व सहयोगी के रूप में मनोज घीया ने विवाह संस्कार का सारा मांगलिक आयोजन विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

इस अवसर पर अभातेयुप साथी विकास बोथरा, शुभम बरड़िया, सभा मुख्य ट्रस्टी, श्रीचंद नौलखा, सभा उपाध्यक्ष महेंद्र बरड़िया, तेयुप मंत्री ऋषभ दुगड़ सहित अन्य पदाधिकारीगण, सदस्यों एवं पारिवारिक लोगों की अच्छी उपस्थिति रही।

✦ *श्रावक बारहव्रतों को स्वीकार करें तो कुछ अंशों में संयम जीवन में आ जाएगा।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

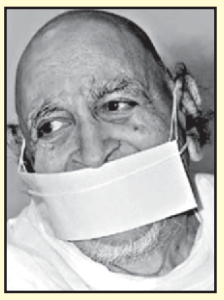

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

भाव-परिवर्तन का अभियान

कायिक प्रेक्षाध्यान है, सहज सरल सदुपाय।
केंद्र-जागरण मार्ग में, इसकी अनुपम दाय।।
प्रेक्षा का उद्देश्य है, समता का अभ्यास।
पल-पल नियमितता सधे, आए नया प्रकाश।।
केंद्र चेतना के सभी, हैं तन में अविकार।
वैज्ञानिक की ग्रंथियाँ, चक्रयोग के द्वार।।
ये प्रसुप्त जब तक रहें, प्रज्ञा होती सुप्त।
नश्वर तन में समझ लो, ये हैं निधियाँ गुप्त।।
उनकी जागृति हेतु है, यह सारा अभियान।
ऊर्ध्वारोहण के लिए, साधक करे प्रयाण।।

प्रश्न : हमारे शरीर में इष्ट भी हैं, अनिष्ट भी हैं, सार भी हैं, असार भी हैं। कौन किस तत्त्व को देखता और पकड़ता है, यह उसकी अपनी क्षमता और साधना पर निर्भर है। शरीर-प्रेक्षा के द्वारा हम प्रकंपनों और संवेदनों को पकड़ने में सफल हो जाते हैं। अभ्यास की पुष्ट भूमिका में हमारी पहुँच कहाँ तक हो सकती है?

उत्तर : प्रेक्षाध्यान का एक प्रयोग है—चैतन्य-केंद्रों का ध्यान। यह शरीर-प्रेक्षा का ही विकसित रूप है। अल्पकालिक शरीर-प्रेक्षा में एक-एक अवयव पर थोड़े समय के लिए ध्यान केंद्रित होता है, उसमें यह संभव नहीं है। प्रत्येक अवयव पर दीर्घकालिक प्रेक्षा का अभ्यास हो तो ध्यानस्थ व्यक्ति चैतन्य-केंद्रों तक पहुँच जाता है। वैसे तो शरीर-प्रेक्षा में चैतन्य-केंद्रों का ध्यान सहज ही हो जाता है, फिर भी विशेष विकास के लिए उनकी जानकारी और उन पर ध्यान का दीर्घकालिक अभ्यास बहुत जरूरी है। चैतन्य-केंद्र शरीर के महत्त्वपूर्ण भाग हैं, जहाँ हमारी चेतना घनीभूत होकर रहती है। सामान्यतः पूरे शरीर में चैतन्य होता है। जैन दर्शन के अनुसार आत्मा शरीर-व्यापी हैं। किंतु शरीर के कण-कण को जाग्रत कर पाना हर एक व्यक्ति के लिए संभव नहीं है। इसलिए कुछ विशिष्ट केंद्र, जहाँ से चेतना की रश्मियाँ सरलता से बाहर आ सकती हैं, जाग्रत करने के लिए प्रेक्षा का प्रयोग किया जाता है। उन केंद्रों का जितना-जितना जागरण होता है, उतना-उतना अतींद्रिय ज्ञान उपलब्ध होता है। ध्यान का अभ्यास जितना पुष्ट होता है, सुप्त केंद्रों का जागरण उतनी ही तीव्रता से होने लगता है।

प्रश्न : ध्यान की अनुभूत और प्रायोगिक पद्धति का आविष्कार कर आपने उन लोगों का बहुत उपकार किया है, जो इस दिशा में आगे बढ़ना चाहते हैं। जिन लोगों के मन में ऐसी कोई अभिरुचि नहीं है, उन्हें भी इस ओर प्रेरित किया जा सकता है। इस संदर्भ में एक प्रश्न उठता है कि प्रेक्षाध्यान का मूलभूत उद्देश्य क्या है?

उत्तर : प्रेक्षा के प्रयोग का मुख्य उद्देश्य है—समता का अभ्यास। इसके लिए गहराई में उतरकर देखना जरूरी है। जानने और देखने की चेतना जाग्रत हो जाए, द्रष्टाभाव विकसित हो जाए, राग और द्वेष की चेतना क्षीण हो जाए तो समता स्वयं घटित हो जाती है। समत्व का विकास होने लगता है तो सारी विषमताएँ टूटने लगती हैं, अनियमितता समाप्त हो जाती है और जीवन को नया प्रकाश मिल जाता है। समत्व के विकास में प्रियता और अप्रियता की संवेदना कम होती है, वस्तु की यथार्थता समझ में आ जाती है और आसक्ति का विलय हो जाता है।

मनुष्य की सबसे बड़ी चाह है कि उसे एकांतिक और आत्यंतिक सुख मिले। यह तब तक नहीं मिल सकता, जब तक उसकी प्रज्ञा समत्व में प्रतिष्ठित नहीं हो जाती। इसके लिए चैतन्य-केंद्रों के ध्यान का विशेष महत्त्व है। क्योंकि ये चैतन्य-केंद्र अपरिष्कृत रूप में रहकर विषमता के भाव उत्पन्न करते हैं और जब ये परिष्कृत हो जाते हैं तो समता के भाव उत्पन्न करते हैं। अशुद्ध भावधारा चैतन्य-केंद्रों की मलिनता का हेतु है और विशुद्ध भावधारा उन्हें निर्मल बनाती है। विशुद्ध भावधारा से चैतन्य-केंद्रों पर ध्यान करने से, उनकी प्रेक्षा करने से वे जाग्रत हो सकती हैं। ध्याता की क्षमता के आधार पर केंद्रों के जागरण में समय और श्रम की तरतमता अवश्य रहती है, फिर भी यह निश्चित है कि इस क्षेत्र में किया गया श्रम व्यर्थ नहीं होता। वह किसी-न-किसी रूप में समत्व के विकास में निमित्त बनता ही है।

प्रश्न : ध्यान की क्षमता और योग्यता अलग-अलग हो सकती है। ध्यान की विधियाँ भी अनेक हैं। प्रक्रिया के भेद से परिणाम में भी भेद हो सकता है। किंतु जिस शरीर को माध्यम बनाकर हम साधना करते हैं, वह तो सबके पास एक जैसा ही है। आज तक ध्यान के जितने प्रयोक्ता हो चुके हैं, उन्होंने इस शरीर को बाहर और भीतर से बार-बार देखा है। भगवान महावीर तो शरीर-प्रेक्षा के प्रयोग करते ही थे। फिर भी किसी ने चैतन्य-केंद्रों की चर्चा नहीं की। आपकी दृष्टि से चैतन्य-केंद्र क्या हैं? अतीत में इनकी कोई पहचान थी या नहीं?

उत्तर : चैतन्य-केंद्र कोई हमारी नई खोज नहीं है। जो-जो ध्यान की गहराई में पहुँचे हैं, उन्होंने अपने चैतन्य-केंद्रों को जाग्रत पाया है। वैसे इन केंद्रों की संख्या का निर्धारण कर पाना बहुत कठिन है। अनेक चैतन्य-केंद्र होते हैं। उनमें बहुत कम केंद्रों का अवबोध और जागरण हो पाता है। चैतन्य-केंद्र का अर्थ है—शरीर के कुछ हिस्सों को स्फटिक की भाँति निर्मल बना लेना। इसका दूसरा नाम है—करण। शरीर को करण बनाने का अर्थ है उससे काम करना। हमारी इंद्रियों को करण कहते हैं। क्योंकि हम उसके द्वारा बोध करते हैं। आँख से देखते हैं, कान से सुनते हैं, नासिका से सूँघते हैं। ये अंग विशिष्ट काम देते हैं, इसलिए करण हैं। शरीर का भी एक नाम करण है। इसका वाच्यार्थ यह हुआ कि हम समूचे शरीर को करण बना सकते हैं। करण बनने के बाद शरीर के किसी भी हिस्से से देखा जा सकता है, सुना जा सकता, चखा जा सकता है। आँखों से हम देखते हैं, बोल भी सकते हैं, सुन भी सकते हैं। जैन आगमों में जो संभिन्न स्रोतों-लब्धि की चर्चा है, वह यही तो है। जब पूरा शरीर करण बन सकता है तो शरीर के हर हिस्से से बोलना और देखना संभव हो जाता है। इस तथ्य को दीपक के रूपक से समझा जा सकता है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(५६)

गीत तुम्हारे स्वर मेरे हैं चाहो तो जी भरकर गाऊँ।
चाहो तो मैं बाँध सुरों को नीरव अभिव्यंजन बन जाऊँ।।

अनजानी राहों को पाकर उलझ गई जीवन के अथ में
पाँवों को गति दी तुमने ही अनजाने अनचीन्हे पथ में
अभी कषोपल पर मत कसना नहीं साधना मेरी पूरी
जितनी जल्दी करती उतनी बढ़ जाती मंजिल की दूरी
मोड़-मोड़ पर दीप जलाकर यदि गहरा आलोक बिछाओ
बीहड़ राहों में एकाकी चलकर भी न कभी घबराऊँ।।

मन के खोल झरोखे तुमने परमात्मा का रूप दिखाया
बोध नहीं जिनको कुछ भी उनको जीने का अर्थ सिखाया
छोड़ धरातल दृढ़ यथार्थ का कभी नहीं तुम सपने लेते
सागर की क्या बात रेत में भी जीवन की नौका खेते
पिघल रहे पाषाण सहज ही देख तुम्हारी मुस्कानों को
मिले प्रशिक्षण मुझे अगर तो मैं भी कुछ करके दिखलाऊँ।।

श्रम का सिंचन देकर पल-पल उपवन के स्वामी बन पाए
रत्नों की निधि पाई कैसे इसका राज कौन बतलाए
पा विश्वास तुम्हारा अपना सब कुछ मैंने किया समर्पण
चाहो तो निज रूप निहारो प्रस्तुत है शब्दों का दर्पण
छंदमुक्त को बाँध छंद में अपराधी तो नहीं बनूँगी
इतना आश्वासन दे दो तो छंदों की माला पहनाऊँ।।

(५७)

चंदा से भी अधिक प्यार दे
दुलराया तुमने नखतों को
छिप जाता हर मावस को वह
मुसकाते हैं नभ के तारे
फूलों से भी अधिक प्यार दे
सहलाया तुमने शूलों को
मुरझाते हैं सुमन सभी
इठलाते हैं ये काँटे सारे।।

सूरज की पूजा करते सब
तुमने तम को गले लगाया
अपनी उजली किरणों से भी
उसको जीभर कर नहलाया
जग की मिली उपेक्षा चाहे
पाई तुमसे स्नेहिल छाया
इसीलिए हर चौराहे पर
तुमने ही आलोक बिछाया
बेगानों अनजानों के भी
तुमने कितने काम संवारे।।

धरती के सूने आँगन में
कितने पावन तीर्थ उगाए
मौसम मायूसी का फिर भी
तुमने गीत खुशी के गाए
पतझर को भी खुशहाली का
सहजतया वरदान दिया है
हर वसंत के शुभ वैभव को
बढ़ने का आह्वान किया है
तूफानों के घेरे में भी
आर्यदेव! तुम कभी न हारे।।

आज तर्क के वाहन पर चढ़
हर प्रबुद्ध मानव चलता है
प्रस्तुत करके नई दलीलें
बड़े-बुजुर्गों को छलता है
श्रद्धा से भी सबल हो गई
बौद्धिकता की राजकुमारी
पानी से भी अधिक आज बन
रही देव! क्यों प्यास दुलारी
तुमसे पा सद्बुद्धि देखलो
प्राण-विहग ये पंख पसारे।।

(क्रमशः)

संबोधि

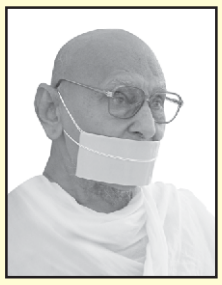

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

बंध-मोक्षवाद

भगवान् प्राह

(१०) आसक्तिश्च पदार्थेषु, व्यक्ताऽव्यक्ताऽव्रतात्मिका।
अनुत्साहः स्वात्मरूपे, प्रमादः कथितो मया।।

पदार्थों में जो व्यक्त और अव्यक्त आसक्ति होती है, वह 'अविरति' कहलाती है। अपने आत्म-विकास के प्रति जो अनुत्साह होता है, उसको मैंने 'प्रमाद' कहा है।

अविरति का क्षेत्र जैसे व्यापक है वैसे प्रमाद का भी व्यापक है। आत्म-स्वभाव को अपुष्ट करने वाली क्रिया का समावेश इसी में है। जब तक आत्मा की विस्मृति होती है और पर-पदार्थों की स्मृति होती है तब तक प्रमाद का हाथ बलवान् होता है।

संक्षेप में आत्म-विस्मृति प्रमाद है और आत्म-स्मृति अप्रमाद। जिस व्यक्ति को प्रत्येक क्रिया में अपनी आत्मा की स्मृति बनी रहती है, वह अप्रमाद की ओर बढ़ता जाता है।

भगवान् महावीर ने कहा है–**'सव्वतो पमत्तस्स भयं, सव्वतो अपमत्तस्स णत्थि भयं'**–जो प्रमत्त है उसे सर्वत्र भय ही भय है और जो अप्रमत्त है, वह भय-मुक्त है। भय का मूल कारण प्रमाद है।

अन्यत्र एक स्थान में भगवान् महावीर ने प्रमाद को दुःख का मूल माना है। एक बार श्रमणों को एकत्रित कर उन्होंने पूछा–आर्यो! जीव किससे डरते हैं?

गौतम आदि श्रमण निकट आए, वंदना की, नमस्कार किया, विनम्र भाव से बोले–भगवन्! हम नहीं जानते, इस प्रश्न का क्या तात्पर्य है। देवानुप्रिय को कष्ट न हो तो भगवान् कहें। हम भगवान् के पास से यह जानने को उत्सुक हैं।

भगवान् बोले–आर्यो! जीव दुःख से डरते हैं।

गौतम से पूछा–भगवन्, दुःख का कर्ता कौन है और उसका कारण क्या है?

भगवान–गौतम! दुःख का कर्ता है जीव और उसका कारण है प्रमाद।

गौतम! भगवन्! दुःख का अंत-कर्ता कौन है और उसका कारण क्या है?

भगवान्–गौतम! दुःख का अंत-कर्ता है जीव और उसका कारण है अप्रमाद।

(११) आत्मोत्तापकरा वृत्तिः, कषायः परिकीर्तितः।
कायवाङ्मसां कर्म, योगो भवति देहिनाम्।।

जो वृत्ति आत्मा को उत्तप्त करती है, उसे 'कषाय' कहा जाता है। मन, वचन और शरीर की प्रवृत्ति को 'योग' कहा जाता है।

कषाय का अर्थ है–आत्मा की उत्तप्ति। वे चार हैं–क्रोध, मान, माया और लोभ। इनके अवांतर भेद सोलह होते हैं।

(१) अनंतानुबंधी (तीव्रतम)–क्रोध, मान, माया और लोभ।
(२) अप्रत्याख्यानी (तीव्रतर)–क्रोध, मान, माया और लोभ।
(३) प्रत्याख्यानी (तीव्र)–क्रोध, मान, माया और लोभ।
(४) संज्वलन (सत्तामात्र)–क्रोध, मान, माया और लोभ।

इनका विलय नौवें गुणस्थान से प्रारंभ होता है और संपूर्ण विलय दसवें गुणस्थान में होता है। अनंतानुबंधी कषाय का प्रभुत्व दर्शन मोह के परमाणुओं से जुड़ा होता है। इनके उदयकाल में सम्यक्त्व की प्राप्ति नहीं होती। अप्रत्याख्यान कषाय के उदयकाल में व्रत का प्रवेश नहीं होता। इसके अधिकारी सम्यक्दृष्टि हो सकते हैं, पर व्रती नहीं होते। प्रत्याख्यान कषाय के उदयकाल में चारित्र-विकारक पुद्गलों का पूर्ण विरोध नहीं होता। इसका अधिकारी महाव्रती नहीं बन सकता। संज्वलन कषाय का उदय वीतराग-चारित्र का बाधक है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

(३) चारित्र मार्ग

प्रश्न-२८: परिहार विशुद्धि चारित्र का क्या स्वरूप है?

उत्तर : परिहार विशुद्धि चारित्र वाले 'परिहार' नाम की तपस्या करते हैं। इसे केवल छेदोपस्थापनीय चारित्र वाले ग्रहण कर सकते हैं। ऐसे मुनि जिनके संयमी जीवन के बीस वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, वे ही यह तप अंगीकार कर सकते हैं। नौ मुनि मिलकर अठारह महीनों तक कठोर तपस्या करते हैं। प्रथम छह महीनों में चार मुनि तप करते हैं, चार मुनि उनकी परिचर्या-सेवा करते हैं, उन नौ में से एक साधु को आचार्य नियुक्त कर लिया जाता है। दूसरी छमाही में तप करने वाले परिचर्या व परिचर्या करने वाले तप करते हैं। आचार्य वही रहते हैं। तीसरी व अंतिम छमाही में आचार्य तप करते हैं, शेष आठों मुनियों में से एक को आचार्य चुन लिया जाता है और बाकी सात मुनि परिचर्या करते हैं।

तप का क्रम	ऋतु	जघन्य	मध्यम	उत्कृष्ट
(१) प्रथम छमाही में	ग्रीष्म	उपवास	बेला	तेला
(२) द्वितीय छमाही में	शीत	बेला	तेला	चोला
(३) तृतीय छमाही में	वर्षा	तेला	चोला	पंचोला

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य सिद्धसेन

मुझे इस दंड से नहीं, बाधति धातु के प्रयोग से क्लेश हो रहा है। आचार्य सिद्धसेन जानते थे, मेरी अशुद्धि की ओर संकेत करने वाला व्यक्ति मेरे गुरु वृद्धवादी के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता, अतः आचार्य सिद्धसेन तत्क्षण सुखशिविका से नीचे उतरे, आत्मालोचन करते हुए गुरु-चरणों में गिर पड़े। आचार्य वृद्धवादी ने उन्हें प्रायश्चित्त-पूर्वक संयम में स्थिर किया एवं अपने स्थान पर गणनायक रूप में उनकी नियुक्ति की, तदनंतर अनशन ग्रहण कर परम समाधि में आचार्य वृद्धवादी स्वर्गवास को प्राप्त हुए।

आचार्य सिद्धसेन संस्कृत भाषा के प्रकांड विद्वान् थे। उस समय संस्कृत भाषा का सम्मान बढ़ रहा था। प्राकृत भाषा ग्रामीण भाषा समझी जाने लगी। जैनेत्तर विद्वान् अपने-अपने ग्रंथों का निर्माण संस्कृत में करने लगे थे। आगमों को विद्वद्भोग्य बनाने के लिए सिद्धसेन ने भी आगम ग्रंथों को प्राकृत से संस्कृत में अनूदित करना चाहा। उन्होंने यह भावना गुरुजनों के सामने प्रस्तुत की। स्थितिपालक मुनियों द्वारा नवीन विचारों के लिए समर्थन पाने का मार्ग सरल नहीं था। सारे संघ ने आचार्य सिद्धसेन का प्रबल विरोध किया। श्रमण बोले–तीर्थंकर और गणधर संस्कृत नहीं जानते थे? उन्होंने अर्धमागधी भाषा में आगमों का प्रणयन क्यों किया? अतः आगमों को संस्कृत भाषा में अनूदित करने का विचार करना ही प्रायश्चित्त का निमित्त है।

संघ के इस अंतर्विरोध के फलस्वरूप आचार्य सिद्धसेन को मुनि वेश बदलकर बारह वर्ष तक गण से बाहर रहने का कठोर दंड मिला। इस पारांचित नामक दसवें प्रायश्चित्त को वहन करते समय आचार्य सिद्धसेन के लिए एक अपवाद था, बारह वर्ष की अवधि में उनसे जैनशासन की महनीय प्रभावना का कार्य संपादित हो सका तो दंड-काल की मर्यादा से पूर्व भी उन्हें संघ में सम्मिलित किया जा सकता है।

प्रबंध कोश के अनुसार सात वर्ष अन्यत्र परिभ्रमण करने के बाद सिद्धसेन अवंती में आए तथा शिव मंदिर में पहुँचकर प्रतिमा को नमन किए बिना ही बैठ गए। पुजारी ने उनसे पुनः-पुनः प्रतिमा को प्रणाम करने के लिए कहा, पर आचार्य सिद्धसेन पर इसका कुछ भी प्रभाव नहीं हुआ। उन्होंने पुजारी की बात को सुनकर भी अनसुना कर दिया। इस घटना की सूचना राजा के कानों तक पहुँची। विक्रमादित्य स्वयं शिव मंदिर में उपस्थित हुआ और सिद्धसेन से बोला, **'क्षीर लिलिक्षो भिक्षो! किमिति त्वया देवो न वंद्यते**–हे दूग्ध-पान करने वाले श्रमण! देव-प्रतिमा को वंदन नहीं करते?' आचार्य सिद्धसेन बोले, 'मेरा वंदन प्रतिमा सहन नहीं कर सकेगी।'

राजा बोला–**'भवतु, क्रियतां नमस्कारः**–जो कुछ घटित होता है, होने दो। पहले वंदन करो।'

नरेश की आज्ञा से शिव-प्रतिमा के सामने बैठकर आचार्य सिद्धसेन ने काव्यमयी भाषा में उच्च स्वर में पार्श्वनाथ की स्तवना प्रारंभ की। फलस्वरूप आचार्य सिद्धसेन द्वारा स्तुति काव्य के रूप में 'महान् प्रभावक कल्याण मंदिर' स्तोत्र का निर्माण हुआ। कल्याण मंदिर स्तोत्र के ग्यारहवें श्लोक के साथ पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रकट हुई।

आचार्य सिद्धसेन के इस कार्य से जैनशासन की महनीय प्रभावना शतगुणित होकर प्रसारित हुई। राजा विक्रमादित्य ने आचार्य सिद्धसेन का महान् सम्मान किया और उनका परम भक्त बन गया। राजा विक्रमादित्य की विद्वत्मंडली में भी आचार्य सिद्धसेन को गौरवमय स्थान प्राप्त हुआ।

आचार्य सिद्धसेन के प्रस्तुत प्रयत्न को संघ की अतिशय प्रभावना का महत्त्वपूर्ण अंग मानकर श्रमण संघ ने उन्हें दंड मर्यादा से पाँच वर्ष पूर्व ही गण में सम्मिलित कर लिया।

सिद्धसेन प्रगतिगामी विचारों के धनी थे। उनके नवीन विचारों का विरोध होना स्वाभाविक था। एक बार सिद्धसेन भृगुकच्छ (भृगुपुर) गए। भृगुपुर में उस समय बलमित्र के पुत्र धनंजय का राज्य था। राजा ने आचार्य सिद्धसेन का भक्तिपूर्वक सत्कार किया। धनंजय शत्रुओं से आक्रांत हुआ तब सिद्धसेन ने ही सैन्य संरचना की कला बताकर धनंजय को विजयी बनाया था।

सैन्य-रचना में सिद्धहस्त होने के कारण उनका नाम सिद्धसेन प्रसिद्ध हुआ प्रतीत होता है।

अवंती-नरेश विक्रमादित्य और बंग-नरेश देवपाल की तरह भूपति धनंजय भी आचार्य सिद्धसेन का परम भक्त बन गया। **(क्रमशः)**

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 - 20 फरवरी, 2022

✦ *व्यक्ति नशे के दुष्परिणामों को समझ ले तो नशे की लत से छुटकारा मिल सकता है। गलत कार्यों में व्यक्ति धन का नियोजन क्यों करे?*

—आचार्यश्री महाश्रमण

दीक्षा के 225 वर्ष पूर्ण पर विशेष

तेरापंथ की श्रीवृद्धि के प्रतीक मुनि हेमराजजी स्वामी

❐ मुनि कुमुदकुमार ❐

तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्यों का स्थान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है। उनकी आज्ञा, उनका सम्मान, उनका अहिसात्मक, अनुशासन अनुलंघनीय होता है। आचार्यों ने अपनी साधना, प्रज्ञा, समयज्ञता, दूरदर्शिता एवं युगानुकुल चिंतन से संघ समाज को जीवंत मार्गदर्शन दिया है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस गौरवशाली संघ में ऐसे संत भी हुए हैं, जिन्होंने संघ के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया है। गुरुदेव श्री तुलसी ने मुनि हेमराज जी (सिरियारी) एवं मंत्री मुनि मगनलाल जी स्वामी को 'शासन महास्तंभ' के अलंकरण से अलंकृत कर उनकी महत्ता को उजागर किया। दोनों ही मुनिप्रवर का धर्मसंघ में विशेष अनुकरणीय योगदान रहा है। वर्तमान में इस संघ को अन्य संप्रदाय के लोग गरिमामय दृष्टि से निहार रहे हैं। प्रारंभ में स्थिति ठीक इसके विपरीत थी। जब तेरापंथ धर्मसंघ संघर्षों के चक्रवात में अपने अस्तित्व के लिए जूझ रहा था। और विकास के लिए सतत प्रयत्नशील था। तब ३६ वर्ष की दीर्घ अवधि में भी वह साधुओं की १२ की संख्या में आगे नहीं बढ़ सका। आचार्यश्री भिक्षु ने वि०सं० १८१७ में तेरापंथ धर्मसंघ का प्रवर्तन किया तब तेरह साधु थे किंतु आगमोक्त चर्या एवं कठोर अनुशासन के कारण सात साधु संघ से बाहर हो गए और केवल छः साधु रहे।

मुनि हेमराज जी स्वामी का जन्म माघ शुक्ला त्रयोदशी वि०सं० १८२६ पुष्य नक्षत्र आयुष्य मानयोग में सिरियारी में हुआ। अध्यात्म का सिंचन पाकर २४ वर्ष के उफनते यौवन में भोगवाद एवं उपभोगतावाद को त्यागकर संयम की स्रोत स्विनि में स्वयं को निमज्जित कर दिया। एक अनूठा संयोग कि जन्म एवं दीक्षा दोनों माघ शुक्ला त्रयोदशी पुष्य नक्षत्र आयुष्यमान योग में हेमराजजी की दीक्षा के समय संघ में १२ साधु थे, आप तेरहवें साधु हुए। इसके बाद संख्या निरंतर बढ़ती गई। इसलिए श्रीमद् जयाचार्य ने लिखा–

द्वादश मुनि आगे हुता, त्या पछै वृद्धि थई रे। हेमचरण सुविद्धिकरण प्रत्यक्ष वयण मिल ही रे।

मुनि हेमराजजी की महिमा एवं गरिमा का अंकन करते हुए गणाधिपति श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने वि०सं० २०५३ में हेम दीक्षा द्विशताब्दी समारोह मनाया। पहला अवसर था तेरापंथ धर्मसंघ में किसी संत के दीक्षा द्विशताब्दी वर्ष मनाने का। तीन चरण में आयोजित दीक्षा द्विशताब्दी समारोह में बीदासर में सतरह, श्रीडूंगरगढ़ में सात एवं गंगाशहर में इक्कीस इस प्रकार एक वर्ष में कुल ४५ दीक्षाएँ संपन्न हुई।

मुनि हेमराजजी स्वामी गृहस्थावस्था से ही आगमज्ञाता, शास्त्रार्थ निपुणता अकाट्य तर्क शैली के गुणों से संपन्न थे। हेमराज जी जब दीक्षा लेने वाले थे तब उनकी प्रतिभा के कारण आचार्यश्री भिक्षु ने अपने उत्तराधिकारी युवाचार्य श्री भारमल जी ने कहा–

भारीमाल स्यू भिक्खू कहै अब,
थे हुवा निचिन्त।
आगे तो थारे म्है हुता,
अब हेम अघजीत।।

आचार्यश्री भिक्षु ने मुनि हेमराज जी को शास्त्रार्थ में अपने समकक्ष मानकर युवाचार्य भारमल जी को निश्चित कर दिया। मुनि हेमराज जी आशु कवि थे। वे व्याख्यान देते-देते नव रचना बनाकर जनता को सुनाते। एक बार मुनि वेणीरामजी ने आचार्यश्री भिक्षु से कहा–भंते! मुनि हेमराज जी को व्याख्यान पूरे कंठस्थ नहीं हैं। वे जोड़ते जाते हैं। और व्याख्यान देते जाते हैं। आचार्यश्री भिक्षु ने जवाब देते हुए कहा–केवली सूत्र व्यतिरिक्त ही होते हैं। मुनि हेमराजजी की काव्यकला व्याख्यान देने की शैली बेजोड़ थी। तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षा देने का अधिकार आचार्यों का होता है। विशेष परिस्थिति में आचार्यश्री की आज्ञा से साधु-साध्वी भी दीक्षा प्रदान करते हैं। मुनि हेमराजजी ने १४ दीक्षा प्रदान की। मुनि सतीदास जी जिनको आचार्यश्री जीतमल जी ने अतिरिक्त सम्मान दिया। संघ में उनका विशिष्ट स्थान था। ॐ अ०भी०रा० शि०को० नमः इसमें अमीचंदजी और शिवजी इन दोनों तपस्वियों का नाम आता है। इन दोनों तपस्वियों और सतीदास जी को दीक्षित करने का श्रेय मुनि हेमराज जी को मिला। नंदूजी को गृहस्थ वस्त्रों एवं आभूषणों सहित दीक्षा प्रदान की जो इतिहास का नव आलेख बना।

मुनि हेमराजजी का जीवन तप संयम से ओत-प्रोत था। शीतकाल की सर्द हवाओं में केवल एक पछेवड़ी का उपयोग कर साधना करते थे। जिस तरह लड़ाई के मैदान में सैनिक की निगाहें मोर्चे पर होती है, न की अपने घावों पर उसी तरह मुनि हेमराज जी स्वामी का ध्यान आत्मकेंद्रित था। अपने वर्ग (सिंघाड़ा) में रहने वाले संतों को दीर्घकालीन तपस्या की प्रेरणा एवं सहयोग देते रहते थे। सहयोगी संत प्रतिवर्ष लंबी-लंबी तपस्याएँ करते १०४, १०६, १८६ के अंकों को छुआ तो मुनि उदयचंदजी प्रतिवर्ष २-३ मासखमण कर कर्ममल को दूर करते।

तेरांपथ के प्रथम चार आचार्यों की मुनि हेमराज जी पर विशेष कृपा दृष्टि एवं बहुमान का भाव बना रहा। आचार्यश्री भिक्षु मुनि हेमराज जी की गृहस्थावस्था से ही बहुत अधिक प्रभावित थे और उनकी दीक्षा के लिए उन्होंने अतिरिक्त प्रयत्न किया, क्योंकि वे उनकी दीक्षा में कोई विशेष प्रतिभा के योगदान की अनुभूति करते थे। मुनि हेमराज जी निष्प्रिय एवं अनासक्त व्यक्तित्व के धनी थे। वे सब प्रकार से योग्य, सक्षम, प्रतिभावान एवं साधुत्व में जागरूक पापभीरू साधु थे। उनमें विद्वता एवं विनम्रता की पराकाष्ठा मणि कांचन का योग थी। उदयपुर के महाराणा ने जब आचार्यश्री भारमलजी को उदयपुर आने का निवेदन किया तब आचार्यश्री भारमलजी ने मुनि हेमराज जी को अपने ही समान मानकर संतों के साथ उदयपुर भिजवाया। आचार्यश्री रायचंद जी ने भी उन्हें आदरास्पद स्थान दिया। उनके स्वर्गवास के बाद आचार्यश्री रायचंदजी ने जो भाव व्यक्त किए श्रीमद् जयाचार्य जी ने उसे दोहे में लिखा–

भिक्खू भारीमाल सतयुगी चल्या हो,
जब इसी करडी लगी नाय।
पिण हिवडै करडी लागी घणी हो,
इम बोल्या ऋषराय।।

आचार्य श्री भिक्षु ने तेरापंथ की आत्मा का निर्माण किया तो शरीर का निर्माण किया श्रीमद् जयाचार्य जी ने।

नए संविधान नव व्यवस्था कर तेरापंथ धर्मसंघ को संवर्धित किया। ऐसे विरल प्रतिभावान, प्रभावशाली, आत्मसाधक आचार्य के विद्यागुरु थे मुनि हेमराज जी स्वामी। मुनि हेमराजजी स्वामी के कहने पर ही जयाचार्य जी ने चौबीसी की रचना की। अपने विद्या गुरु के प्रति जिन भावों से उन्होंने कृतज्ञता ज्ञापित की उससे सहज ही मुनि हेमराज जी के वर्चस्व, नेतृत्व, व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व का अनुमान लगा सकते हैं।

जयाचार्य जी ने कृतज्ञता व्यक्त करते हुए लिखा–

मुनिवर रे हु तो बिंदु समान थो रे,
तुम कियो सिंधु समान हो लाल।
तुम गुण कबहु न विसरु रे,
निश दिन धरू तुझ ध्यान हो लाल।।

वस्तुतः मुनि हेमराजजी स्वामी का धर्मसंघ में पदार्पण विकास का सेतु बना। बारह से तेरह की संख्या आपके आने से हुई जो कभी घटी नहीं सदैव बढ़ती गई। आज सात समंदर पार भी धर्मसंघ की महिमा एवं गरिमा गूँज रही है। ऐसे पुण्य पुरुष आत्मसाधक की हेम दीक्षा द्विशताब्दी के प्रथम चरण में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के श्रीचरणों में करकमलों से प्रथम दीक्षित होने का सौभाग्य मिला। ऐसे महापुरुष के दीक्षा के २२५ वर्ष पूर्ण होने पर अनंत-अनंत नमन।

५०वें चयन दिवस पर कार्यक्रम

हिरियूर।

हिरियूर तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में साध्वी प्रमिलाकुमारी जी के सान्निध्य में संघ महानिदेशिका महाश्रमणी असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के ५०वें चयन दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ। साध्वीश्री द्वारा मंत्रोच्चारण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। चिरायु चौपड़ा ने मंगलाचरण किया।

साध्वी प्रमिलाकुमारी जी ने कहा कि आज तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में पहली बार साध्वीप्रमुखाश्री का अमृत महोत्सव आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में मनाया जा रहा है। साध्वीश्री जी ने बताया कि साध्वीप्रमुखा पद प्राप्त करने के बाद जो पहली दीक्षा हुई उन ५ मुमुक्षु बहनों में एक वे भी थे और इसलिए उन्हें दीक्षा के पश्चात एक वर्ष तक संघ महानिदेशिका के निकट सन्निधि में रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ। अपने कुछ संस्मरणों से उन्होंने साध्वीप्रमुखाश्रीजी के वात्सल्यमयी नेतृत्व का चित्रण किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्रजी की विनम्रता, अखंड समर्पण भाव एवं लेखन वैशिष्ट्य का बखान करते हुए उन्होंने नौ मंगलभावना में साध्वीप्रमुखाश्री जी के व्यक्तित्व को घटित किया। इस अवसर पर उत्तर कर्नाटक प्रांत के अध्यक्ष जयंतिलाल चौपड़ा, देवराज चौपड़ा, मांगीलाल तातेड़, कन्या मंडल की संयोजिका रूपाली ढेलड़िया, युवक परिषद सदस्य विकास बोकड़िया, सुमित्रा चौपड़ा, किशोर मंडल सदस्य मंथन तातेड़ और उपासिका बहन सीमा चौपड़ा ने साध्वीप्रमुखाश्री जी के अभिनंदन के अपने-अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल, हिरियूर ने भी अपने सुमधुर गीत से साध्वीप्रमुखाश्रीजी का अभिनंदन किया। साध्वी आस्थाश्री जी एवं साध्वी विज्ञप्रभा जी ने भी गीतिका एवं साध्वीप्रमुखाश्रीजी के जीवन की संक्षिप्त झाँकी के माध्यम से मंच का संचालन किया। कार्यक्रम का समापन साध्वीश्री जी के मंगलपाठ से हुआ।

साध्वीप्रमुखाश्री जी का मनोनयन दिवस

पालघर।

स्थानीय तेरापंथ भवन में असाधारण साध्वीप्रमुखाश्रीजी का ५०वाँ मनोनयन दिवस अमृत महोत्सव के रूप में आयोजित किया गया। रात्रिकालीन कार्यक्रम कन्या मंडल के सुरीले स्वर लहरियों के संगान से प्रारंभ किया। महिला मंडल व कन्या मंडल ने ज्ञानवर्धक, मनमोहक, विभिन्न झाँकियाँ प्रस्तुत की। बड़ी संख्या में उपस्थित श्रावक समाज ने प्रस्तुतीकरण की प्रशंसा की।

सभाध्यक्ष नरेश राठौड़, मंत्री दिनेश राठौड़, महिला मंडल अध्यक्षा अनोखा बदामिया, तेयुप अध्यक्ष प्रकाश बाफना, उपाध्यक्ष भगवान सिंघवी, अभातेममं कार्यकारिणी सदस्या संगीता बाफना, उपासक मीठालाल सिंघवी आदि वक्ताओं ने असाधारण नेतृत्व, विनय, पुरुषार्थ, समर्पण, विनय, लेखन के प्रति भावों की अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। वात्सल्य की अप्रतिम मूरत प्रमुखाश्री जी के प्रति हृदय की अनंत गहराईयों से अभिवंदना अर्पित की गई। कार्यक्रम का संचालन व आभार महिला मंडल मंत्री संगीता चपलोत ने किया।

स्नेहम प्रोजेक्ट कार्यक्रम

जयपुर शहर।

बाल संबल विद्यालय में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल से विमला दुगड़ एवं तेरापंथ महिला मंडल, जयपुर-शहर की अध्यक्ष निर्मला सुराणा, मंत्री पायल बैद एवं मंडल की बहनें, भंवरलाल संगीता बरड़िया का आगमन हुआ। आपने बच्चों को स्टेशनरी, चॉकलेट, खाने का समान भेंट किया।

संस्था में इन सभी अतिथियों की उपस्थिति में ध्वजारोहण किया गया। बच्चों की डांस प्रस्तुति एवं गायन से कार्यक्रम में चार-चाँद लग गए। रश्मि गोलछा ने बच्चों के लिए २० पलंग भेंट किए। मंडल की तरफ से बच्चों को ट्रेक-सूट्स, गद्दे, कंबल का वितरण किया।

तुलसी की अनुपम कृति हो तुम

● साध्वी सुधाप्रभा ●

शासन माता साध्वीप्रमुखा, मम जीवन आधार है।
पाकर नेहिल सन्निधि तेरी, गण-गुलशन गुलजार है।।

तुलसी की अनुपम कृति हो तुम, तेरा क्या गुणगान करें?
शब्दकोश में शब्द अल्प हैं, फिर कैसे बहुमान करें?
मोतियों की गुणमाला का, गण में अति उपकार है।।

जीवन ज्योतिर्मय विभामय, भरता नव उल्लास है।
महाश्रमणीजी! तब चरणों में, रहता नव मधुमास है।
फूलों-सी सौरभ जीवन में, मधुकर-सी गुंजार है।।

खिल रहे हैं पुष्प अनगिन, सिंचन तुमसे पाकर के।
जल रहे हैं दीप मनोहर, दीपित तुमसे होकर के।
तेरे इंगित पर बढ़ने हित, मन से हम तैयार है।।

कदम-कदम पर कमल खिले, हम करते दिल से कामना।
आठों-याम रहे दीवाली, यही हमारी भावना।
भैक्षव-गण की महानिधि तुम, सचमुच में मंदार हो।।

पंख होते तो उड़कर आते, तव चरणों में आज हम।
तुम्हें बधाते, मंगल गाते, मोद मनाते मिलकर हम।
लो स्वीकारो, भेंट हमारी, श्रद्धा का उपहार है।

लय : कलियुग बैठा मार---

गणतंत्र दिवस पर ध्वजारोहण के कार्यक्रम

गणतंत्र दिवस पर ध्वजारोहण कार्यक्रम

बालोतरा।

गणतंत्र दिवस पर ध्वजारोहण ओसवाल समाज अध्यक्ष शांतिलाल डागा, तेरापंथ सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, मंत्री महेंद्र बैद, महिला मडल अध्यक्षा निर्मला देवी संकलेचा, मंत्री संगीता बोथरा, तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल, मंत्री नवीन सालेचा और अणुव्रत समिति अध्यक्ष जवेरीलाल सालेचा द्वारा किया गया। राष्ट्रगान का संगान किया और ध्वज को सलामी दी गई।

इस अवसर पर सभा सहमंत्री मोहनलाल बाफना, कोषाध्यक्ष देवीलाल ओस्तवाल सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

झंडारोहण का कार्यक्रम

पीलीबंगा।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण कन्या सुरक्षा सर्किल पर झंडारोहण का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर महासभा कार्यकारिणी समिति के सदस्य देवेंद्र बांठिया, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हनुमान रोहतकिया, महिला मंडल अध्यक्ष विनोद देवी छाजेड़, जैन सभा के अध्यक्ष मूलचंद बांठिया, अभातेयुप क्षेत्रीय प्रभारी सतीश पुगलिया, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष राकेश नाहटा, सभा मंत्री प्रकाश डाकलिया, ज्ञानशाला आंचलिक प्रभारी प्रतिभा दुगड़ सहित सभा, महिला मंडल, तेयुप के पदाधिकारीगण सहित स्थानीय गणमान्य व्यक्तित्व उपस्थित थे।

गणतंत्र दिवस का आयोजन

विजयनगर।

अभातेयुप की शाखा परिषद तेयुप की टीम ने टूमकुर रोड पर स्थित हिरेल्ली, लिंगेन्हल्ली एवं कोरा की सरकारी स्कूलों में बच्चों के साथ राष्ट्रीय ध्वज फहराकर ७३वाँ गणतंत्र दिवस मनाया। इस अवसर पर सभी बच्चों को चॉकलेट-बिस्किट एवं उपहार दिए गए।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम अध्यक्ष अमित दक ने लिंगेन्हल्ली एवं कोरा स्कूल के सभी बच्चों को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ प्रेषित की तथा उपाध्यक्ष प्रवीण गन्ना ने हिरेल्ली स्कूल के बच्चों को शुभकामनाएँ प्रेषित की। इस अवसर पर उपाध्यक्ष मनोज बरड़िया, सहमंत्री कमलेश चोपड़ा, कोषाध्यक्ष राकेश पोखरना एवं संगठन मंत्री दीपक भूरा उपस्थित थे। आभार ज्ञापन मंत्री विकास बांठिया ने किया।

कन्या सुरक्षा सर्कल पर ध्वजारोहण

चेन्नई।

आचार्य महाश्रमण जैन तेरापंथ पब्लिक स्कूल में अभातेममं के तत्त्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल, चेन्नई द्वारा माधावरम में स्थित कन्या सुरक्षा सर्कल पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित हुआ एवं पूर्व में निर्मित कन्या सुरक्षा सर्कल का योगक्षेम भी किया गया।

इस अवसर पर अध्यक्ष पुष्पा हिरण, संरक्षिका कमला गेलड़ा, मंत्री रीमा सिंघवी एवं माधावरम की बहनों की सराहनीय उपस्थिति रही। कार्यक्रम की शुरुआत सामुहिक नमस्कार महामंत्र से हुआ। तत्पश्चात अध्यक्ष पुष्पा हिरण ने सभी बहनों का स्वागत करते हुए सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामना संप्रेषित की। उपस्थित सभी ने राष्ट्रगान के साथ ध्वजारोहण करके कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम को सफल बनाने में माधावरम की बहनों का विशेष सहयोग रहा। माधावरम जैन पब्लिक स्कूल के संवाददाता अशोक बोहरा का भी विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन मंत्री रीमा सिंघवी ने किया। कार्यक्रम में माधावरम स्कूल के कर्मचारियों का भी सहयोग रहा। धन्यवाद ज्ञापन संरक्षिका कमला गेलड़ा ने किया।

गणतंत्र दिवस कार्यक्रम

गंगाशहर।

तेरापंथ युवक परिषद के तत्त्वावधान में किशोर मंडल, गंगाशहर ने ७३वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में जरूरतमंद बच्चों को मिठाइयाँ और भोजन के पैकेट का वितरण किया और सभी बच्चों के द्वारा जय हिंद, भारत माता की जय के नारों के साथ संपूर्ण वातावरण को गूंजायमान कर दिया।

इस कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष विजेंद्र छाजेड़, कुलदीप छाजेड़, धनपत भंसाली, रोहित बैद, ऋषभ ललानी, विनोद जैन, मुदित सेठिया, रौनक चोरड़िया, रौनक बोथरा, चैतन्य रांका, जयंत चौपड़ा, यश सामसुखा, प्रद्युमन गोलछा, युवराज डागा, निखिल अरोरा, मुदित ललवानी व अन्य तेयुप सदस्य और किशोर साथियों की उपस्थिति रही।

ध्वजारोहण कार्यक्रम

जयपुर शहर।

तेममं द्वारा महाश्रमण कन्या सुरक्षा सर्किल, गांधीनगर रेलवे स्टेशन, महिला चिकित्सालय सांगानेरी गेट, नाहटा पेट्रोल पंप मानसरोवर, चंदवाजी बाल संबल, शास्त्रीनगर, विद्यालय इस तरह ६ जगह पर उल्लास व उमंग के साथ ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित किया गया। अध्यक्ष निर्मला सुराणा, मंत्री पायल बैद, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की वरिष्ठ सदस्य विमला दुगड़, पूर्व अध्यक्ष गुलाब बोथरा, नेहा नागोरी, पूर्व मंत्री सुमन कोठारी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों ने ध्वजारोहण किया, राष्ट्रीय गान, भारत माता की जय, वंदे मातरम, जय हिंद के साथ सभी को गणतंत्र दिवस की बधाई व शुभकामनाएँ दी।

ध्वजारोहण कार्यक्रम

पर्वत पाटिया।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में ७३वें गणतंत्र दिवस पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम तेरापंथ भवन पर रखा गया। कार्यक्रम की शुरुआत में ध्वजारोहण सभा अध्यक्ष कमल पुगलिया द्वारा किया गया एवं सामुहिक राष्ट्रगान द्वारा ध्वजवंदन किया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष कमल पुगलिया, तेयुप अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार, महिला मंडल अध्यक्ष ललिता पारेख, अभातेयुप सदस्य एवं सीपीएस के राष्ट्रीय सहप्रभारी कुलदीप कोठारी, तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष कांतिलाल सिंघवी, सभा मंत्री भगवती परमाार, शांतिलाल चौधरी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों ने अपने वक्तव्य में गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ प्रेषित की।

आभार ज्ञापन तेयुप सहमंत्री 'द्वितीय' शैलेश चंडालिया ने किया एवं कार्यक्रम का संचालन सभा सहमंत्री अनिल चौधरी ने किया। कार्यक्रम में सभा, महिला मंडल, तेयुप, कन्या मंडल, किशोर मंडल एवं श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

महाप्रज्ञ स्तंभ पर गणतंत्र दिवस

साउथ हावड़ा।

गणतंत्र दिवस पर तेयुप द्वारा ध्वजारोहण कार्यक्रम महाप्रज्ञ स्तंभ फोरशोर रोड पर बड़े हर्षोल्लास से किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। तेयुप के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने उपस्थित सभी का स्वागत-अभिनंदन करते हुए अपना वक्तव्य रखा।

साउथ हावड़ा तेरापंथी सभा के मुख्य न्यासी संजय नाहटा, न्यासी अशोक कोठारी, अध्यक्ष सुशील गिड़िया (मुख्य अतिथि), महिला मंडल अध्यक्षा चंद्रकांता पुलिया, टीपीएफ अध्यक्ष मनोज सेठिया, अणुव्रत समिति से कोषाध्यक्ष दीपक नखत ने वक्तव्य रखा एवं ध्वजारोहण किया।

परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष पवन कुमार बैंगाणी, पूर्व अध्यक्ष राजेश कुमार बैद एवं सूर्य प्रकाश डागा की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस कार्यक्रम में ४० युवकों एवं किशोरों ने अपनी सहभागिता दर्ज करवाई। कार्यक्रम का संचालन मंत्री गगनदीप बैद ने किया एवं आभार सहमंत्री अतिम बेगवानी ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजक मनीष बैद, समित कुमार बैद, सह-संयोजक दीपक नखत का विशेष श्रम रहा।

गणतंत्र दिवस कार्यक्रम

हैदराबाद।

अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में ७३वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में जीवन-विज्ञान के कार्यक्रम का आयोजन गवर्नमेंट हाई स्कूल, बोलाराम में समिति के उपाध्यक्ष अनिल कातरेला की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर ७३वें गणतंत्र दिवस पर झंडा रोहण किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत अणुव्रत समिति की सदस्याओं द्वारा अणुव्रत गीत का संगान किया गया। अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष अनिल कातरेला ने स्वागत वक्तव्य दिया व गणतंत्र दिवस की सभी को शुभकामनाएँ दी।

हैदराबाद महिला मंडल की अध्यक्ष व कार्यकारिणी सदस्य अनिता गिड़िया, प्रिंसिपल बी०एम० विजय कुमार ने शुभकामनाएँ दी। इस अवसर पर हिंदी प्राध्यापक मोहम्मद जहाँगीर ने गणतंत्र दिवस पर देशभक्ति की गीत की प्रस्तुति दी। जीवन विज्ञान की आंध्रा तेलंगाना की संयोजक रीता सुराणा ने यौगिक क्रिया व संकल्प करवाया व विद्यार्थियों को अणुव्रत के बारे में जानकारी दी गई।

अनिल कातरेल की ओर से स्कूल के बच्चों को स्टेशनरी व बिस्किट वितरित किया गया। इस अवसर पर मंडल की उपाध्यक्ष सरला मेहता, मंत्री श्वेता सेठिया, विद्यालय के शिक्षकगण, कर्मचारी व विद्यार्थी आदि उपस्थित थे।

गणतंत्र दिवस कार्यक्रम

पालघर।

तेरापंथी सभा, पालघर द्वारा तेरापंथ भवन के प्रांगण में ७३वे गणतंत्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। ध्वजारोहण सभा अध्यक्ष नरेश राठौड़ ने किया। महिला मंडल अध्यक्ष अनोखाबाई बदामिया, तेयुप अध्यक्ष प्रकाश बाफना, अणुव्रत समिति अध्यक्ष निधि सिंघवी, सभा मंत्री दिनेश राठौड़, सभा उपाध्यक्ष भगवानलाल सिंघवी, चतुर तलेसरा, तेयुप मंत्री दिलीप परमार, ज्ञानशाला प्रभारी हितेश सिंघवी, मुख्य प्रशिक्षिका सविता सिंघवी, उपासक मिठालाल सिंघवी, वनिता बाफना, किशोर मंडल प्रभारी पारस सिंघवी आदि ने गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ प्रेषित कर अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

ध्वजारोहण कार्यक्रम में सभा, महिला मंडल, तेयुप, किशोर मंडल, कन्या मंडल, अणुव्रत समिति, ज्ञानशाला के बच्चों की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन तेयुप कोषाध्यक्ष प्रदीप सिंघवी ने किया।

साध्वीप्रमुखाश्री के चयन दिवस पर

अभिनंदन शत-शत बार

● साध्वी विनयप्रभा ●

संघ शिरोमणि, ममतामयी माँ का करती अभिनंदन शत-शत बार।
जीओ जीओ युग-युग जीओ, जन-जन की है यही पुकार।।अह।। जीओ----

माँ का विरल व्यक्तित्व अनुत्तर साधना, किन उपमाओं से करूँ उपमित।
असाधारण साध्वीप्रमुखा बन, महाश्रमण शासना को कर रही सुशोभित।
स्वर्ण जयंति चयन दिवस की, श्रद्धासिक्त वंदन शत-शत बार।।जीओ।----

पंचनिष्ठामृत देख तुम्हारा, गुरु तुलसी ने चयन किया, भाग्य हमारा।
मल्लिनाथवत् माँ पाकर, चमक उठा यह संघ सितारा।
चिंतामणि चाँदनी का करती हूँ, अभिवंदन शत-शत बार।।जीओ----

अनुपम है कर्तृत्व-व्यक्तित्व तुम्हारा, नारी जग की हो अद्भुत शान।
सात प्रमुखा की श्री संपदा से, अलौकिक बनी है माँ की पहचान।
ममता वत्सलता का दिया पोषण, भूल न पाऊँ माँ का उपकार।। जीओ----

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 - 20 फरवरी, 2022

✦ *विद्या संस्थानों में लौकिक विद्या पढ़ाई जाती है। इसके साथ अलौकिक अर्थात् आत्मविद्या पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव

अहमदाबाद।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव का भव्य आयोजन आठ रक्तदान शिविर के साथ किया। नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तेयुप अध्यक्ष ललित बेंगवानी ने स्वागत वक्तव्य प्रदान किया। अभातेयुप सदस्य एवं कैंप एडवाइजर राजेश चोपड़ा, प्रकाश बैद, अरविंद संकलेचा एवं मंत्री कपिल पोखरना ने विशेष अतिथियों, सहयोगी संस्थाओं, सेवा समर्पित ब्लड बैंकों का मोमेंटो और साहित्य से सम्मान किया।

संजय श्रीवास्तव ने मानव सेवा को समर्पित तेयुप, अहमदाबाद की मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव मुहिम की मुक्तकंठ से सराहना की। उपस्थित सभी महानुभावों ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। एडवाइजर राजेश चौपड़ा ने रक्तदान शिविरों के बारे में जानकारी प्रदान की।

परिषद द्वारा न्यू क्लॉथ मार्किट, सफल बिजनेस पार्क २ एवं ३, सिटी सेंटर-२, पुष्प आर्केड, नवकार इंस्टीट्यूट २ एवं ३ में रक्तदान कैंप आयोजित किए गए, जिनमें ७३१ रक्त यूनिट एकत्रित किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में पदाधिकारीगण के साथ संयोजक दिलीप भंसाली, विशाल भरसारिया, गौतम बरड़िया, सागर सालेचा, मनोज सिंघी, संजय कोठारी एवं कैंप संयोजकों का विशेष श्रम रहा।

नि:शुल्क ब्लड टेस्ट एवं डेंटल चेकअप शिविर का आयोजन

एरोली।

तेयुप एंव ट्रस्ट द्वारा आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एरोली (रबाले) पर नि:शुल्क ब्लड टेस्ट एवं डेंटल चेकअप कैंप का आयोजन किया गया। कैंप की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई।

कैंप में सीबीसी एवं ब्लड शुगर के साथ दाँतों की जाँच पूरी तरह से नि:शुल्क रखी गई। कैंप का लगभग २०० व्यक्तियों ने लाभ लिया। कैंप में एरोली के सेवाभावी डॉक्टर मनीष लोढ़ा एवं एटीडीसी के सभी टेक्नीशियन का विशेष सहयोग रहा। कैंप में तेयुप ट्रस्ट एरोली के अध्यक्ष छोगालाल सोनी की विशेष उपस्थिति रही। साथ ही तेरापंथ समाज, एरोली के वरिष्ठ श्रावक जीतमल कच्छारा, मांगीलाल बोहरा, दिनेश बाफना, राजेंद्र चंडालिया, रामलाल सहलोत की उपस्थिति रही। कैंप में तेरापंथी सभा, महिला मंडल की विशेष उपस्थिति रही। कैंप को सफल बनाने में तेयुप की पूरी टीम एवं किशोर मंडल की पूरी टीम का सक्रिय व महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

पुस्तकों का वितरण

सूरत।

अभातेयुप के त्रिआयामी उद्देश्य—सेवा, संस्कार और संगठन में सेवा के प्रकल्प में तापी जिले के अमोनिया गाँव में बच्चों को स्पर्धात्मक परीक्षा की तैयारी के लिए पुस्तकों का वितरण किया गया। अमोनिया गाँव में स्पर्धात्मक परीक्षा की तैयारी के लिए पुस्तकों की आवश्यकता थी, जिसके लिए जयदीपभाई जयरामभाई गावित (अध्यक्ष कारोबारी समिति तालुका पंचायत डॉल्वन-तापी) ने तेयुप कार्यकारिणी सदस्य सचिन जैन से संपर्क किया। तेयुप, सूरत के अध्यक्ष गौतम बाफना से संपर्क किया उन्होंने पुस्तकों की व्यवस्था करवाके अपनी टीम के साथ जयदीप भाई और आए हुए बच्चों को भेंट की। गाँव के सभी बच्चों एवं गाँव से आए हुए सदस्य ने तेयुप, सूरत का आभार प्रकट किया।

आचार्यश्री भारीमालजी महाप्रयाण द्विशताब्दी कार्यक्रम

एरोली।

करें ओनेस्ट जर्नी अणुव्रत के द्वारा एवं अद्वितीय आचार्यश्री भारीमाल द्विशताब्दी महाप्रयाण दिवस पर कार्यक्रम अणुव्रत समिति मुंबई के तत्त्वावधान में शासनश्री साध्वी कैलाशवती जी एवं साध्वीवृंद के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। अणुव्रत गीत के द्वारा मंगलाचरण तेयुप ने किया। तत्पश्चचात आचार संहिता का वाचन क्षेत्रीय सह-संयोजक सुनील मेहता ने किया। स्वागत भाषण, एरोली सभाध्यक्ष छोगालाल सोनी ने किया। शासनश्री साध्वी कैलाशवती जी, साध्वी पंकजश्रीजी, साध्वी ललिताप्रभाजी, साध्वी शारदाप्रभाजी, साध्वी सम्यक्त्वयशा जी की विशेष प्रेरणा रही।

अणुव्रत समिति, मुंबई की अध्यक्षा कंचन सोनी ने कार्यक्रम के आयोजन हेतु साध्वीश्रीजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए अणुव्रत और उत्कर्ष से जुड़ने की प्रेरणा दी। मंत्री वनिता बाफना ने अभिवंदना करते हुए कहा कि तेरापंथ के विरले आचार्य जो गुरु भिक्षु के कृपा पात्र थे, सत्य एवं समर्पण के पथगामी थे। एरोली ज्ञानशाला के बच्चों ने अणुव्रत पर कव्वाली द्वारा कार्यक्रम को रोचक बना दिया। महिला मंडल द्वारा लघु नाटिका प्रस्तुत की गई।

कार्यक्रम में अणुव्रत समिति से जसराज छाजेड़, अनिल मादरेचा, पंकज चंडालिया, महावीर सोनी, मधु मेहता, विद्या सोनी, कल्पना जैन, आशा सोनी, अनिल चपलोत, रंजन हिरण की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम में एरोली तेरापंथी सभा, तेयुप, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला परिवार की एवं तेरापंथ समाज के सभी श्रावक व श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन साध्वी शारदाप्रभा जी द्वारा किया गया। अंत में आभार ज्ञापन अणुव्रत समिति, नवी मुंबई के संयोजक पवन परमार द्वारा किया गया।

भारीमाल निर्वाण द्विशताब्दी कार्यक्रम

गुवाहाटी।

तेरापंथी सभा द्वारा तेरापंथ धर्मसंघ के द्वितीय आचार्यश्री भारमलजी निर्वाण द्विशताब्दी समारोह का स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में किया गया। इस अवसर पर वक्तव्य, गीतिका, मुक्तक आदि के द्वारा आचार्यश्री भारीमाल जी स्वामी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से किया गया। सभा के अध्यक्ष झनकार दुधोड़िया ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं एवं समाजबंधुओं का हार्दिक स्वागत-अभिनंदन किया एवं आचार्यश्री भारीमालजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला।

तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष मंजु भंसाली, टीपीएफ के अध्यक्ष रामचंद्र संचेती, अणुव्रत समिति अध्यक्ष बजरंगलाल डोसी ने अपने वक्तव्य में आचार्यश्री भारीमालजी को श्रद्धापूर्ण भावांजलि दी। अणुविभा के सहमंत्री छतरसिंह चोरड़िया के साथ बाबूलाल सुराणा एवं बजरंगलाल डोसी ने गीतिका प्रस्तुत की। इस दौरान उपासिका भारती महणोत एवं पुष्पा देवी गोलछा ने अपने भाव व्यक्त किए। समारोह में महिला मंडल उपाध्यक्षा अमराव देवी बोथरा एवं मंजु मेहता ने भी अपने विचार रखे।

समारोह में सभा उपाध्यक्ष दिलीप दुगड़ द्वारा प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें सभा द्वारा पुरस्कार एवं अणुव्रत समिति द्वारा अणुवत डायरी दी गई। सभा अध्यक्ष झनकार दुधोड़िया एवं मंत्री निर्मल सामसुखा ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी समाजबंधुओं के प्रति आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मंत्री निर्मल सामसुखा ने आचार्यश्री भारीमालजी के जीवन की कुछ धटनाओं पर भी प्रकाश डाला।

प्रभु महाश्रमण तुम मेरे अंतर के राम हो

● **साध्वी प्रबुद्धयशा** ●

कोई भी उपाय हुवै तो बताओ

दीपावली का पावन दिन। पूज्यवर के साथ मुख्य मुनिप्रवर, मुनिश्री दिनेश कुमार जी, कुमारश्रमण जी, कीर्तिकुमार जी, विश्रुतकुमारजी आदि भी पधारे। मातृहृदया साध्वीप्रमुखाश्रीजी, मुख्यनियोजिका जी, साध्वीवर्याजी एवं हम कई साध्वियाँ वहाँ उपस्थित थीं।

आचार्यवर—(महान कृपा के साथ) संतों की ओर होकर—आं रो कियां उपचार कियो जा सकै है? आंनै पाछा खड्या कियां कर्या जा सकै। ए ठीक हूं ज्यावै। सारो काम-काज पैली की तरह करणो शुरू कर देवै। कोई तरीको ध्यान में आवै? कोई उपचार हुवै तो बताओ। गुरुदेव की चिंता को देखकर हम सब विस्मित थे।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी—गुरुदेव खूब ध्यान दिरावै है।

कीर्तिमुनि व्यवस्था देख रह्या है।

आचार्यप्रवर ने सबको पूछा—कोई तंत्र, मंत्र, जड़ी-बूंटी, चूर्ण, दवाई ध्यान में हुवै तो बताओ।

फिर कल्पलताजी से—कोई मंत्र जाणो हो के?

कल्पलताजी—गुरुवचन से बड़ा कोई मंत्र नहीं है।

सभी—गुरुकृपा ही सबसे बड़ी औषधि है।

आचार्यवर—जाप-स्वाध्याय का प्रयास तो हो ही रहा है।

सभी—तहत्।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी—स्वाध्याय, जाप, पथ्य एवं सेवा में कोई कमी नहीं है। सतियाँ पूरा ध्यान रख रही हैं।

आचार्यवर—फिर भी कोई उपाय हो जिससे ये ठीक हो जाएँ।

जिनप्रभाजी—गुरुदेव! आपश्री, साध्वीप्रमुखाश्रीजी एवं सभी बहुत कृपा करवा रहे हैं।

गुरुकृपा से ही इनके भीतर शांति, समाधि है यही इन्हें ठीक करेगी।

शिक्षा

आचार्यवर ने एक दिन फरमाया—म्हारी आवाज सुण रह्या हो? चंद्रिकाश्रीजी—तहत् गुरुदेव।

आचार्यवर—देखो। स्वास्थ्य के लिए प्रयास कर रह्या हां। कदै इ सफलता मिल ज्यावै कदै इ नहीं भी मिलै या कम मिलै। तो मन में दु:खी नहीं होणो चाहीजै। इयां सोचणो म्हारै कर्मां को कर्जो उतर रह्यो है। आपां के ऊपर कित्तो कर्मा को कर्जो है, बो उतारणो है। अच्छो है अठै ही उतर ज्यावै, जियां कोई व्यक्ति पर एक करोड़ को कर्जो है। बो २० लाख दै देवै तो लारे ८० लाख ही बचै। फेर कदेइ १५ लाख दै देवै तो ६५ लाख ही शेष रेवै। इयां करतां-करतां पूरो कर्जो उतर ज्यावै। बियां ही समता स्यूं कर्मां को कर्जो उतारणो है। और मुक्ति ने नेडी करणी है।

चंद्रिकाश्रीजी—गुरुदेव बहुत कृपा करवाई। मैं समता स्यूं कर्म काटूं बस आ ही इच्छा है।

एक दिन में तीन बार

दिनांक १२ नवंबर। साध्वी चंद्रिकाश्रीजी मूर्च्छा की सी स्थिति में थी। पूज्यप्रवर प्रातःकाल दर्शन देने पधारे। पर वे मूर्च्छा में थीं। मंगलपाठ सुनाकर पूज्यश्री पधार गए। पुनः मध्याह्न में आचार्यवर आगे का चिंतन करवाने के लिए हमारे ठिकाने पधारे। वे मूर्च्छा में ही थी। पूज्यवर की सन्निधि में साध्वीप्रमुखाश्रीजी आदि साध्वियाँ एवं मुख्यमुनिश्री आदि कई संत उपस्थित थे।

आचार्यवर—अब कांई करणो चाहीजै। अठै डॉक्टर की सुविधा कोनी। आंने जयपुर भेज देणो कियां रेवै। बठै डॉक्टर, हॉस्पिटल सब है।

आचार्यवर चिंतन में थे। अन्य सभी मौन थे, क्योंकि स्थिति गंभीर थी। पुनः आचार्यवर-शरीर और आत्मा दो दृष्टियाँ स्यूं चिंतन करां तो इयां लागै। आत्मा की दृष्टि स्यूं तो अठै ही रहणो उचित है। और शरीर की दृष्टि स्यूं जयपुर जाणो ठीक लागै।

मैंने निवेदन किया—भंते! जब वे होश में थी तब उनकी भिन्न समाचारी, एमआरआई आदि की इच्छा नहीं थी। वे हमेशा मना करती रही।

पूज्यवर ने उनके ज्ञातिजनों से पूछा—उन्होंने भी जयपुर की इच्छा अभिव्यक्त की। पूज्यवर ने जयपुर का निर्णय करवा दिया।

फिर शाम को लगभग आधा घंटा दिन रहा तब साध्वी जिनप्रभाजी कार्यवश गुरुदेव के ठिकाने गईं।

(क्रमशः)

राग के समान दु:ख नहीं और त्याग के समान सुख नहीं : आचार्यश्री महाश्रमण

सुजानगढ़, १ फरवरी, २०२२

अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे शरीर में आत्मा से जुड़ी पाँच ज्ञानेंद्रिय है। हम पंचेंद्रिय प्राणी है। पशु, देव और नारकीय जीव भी पंचेंद्रिय प्राणी होते हैं।

हमारे पाँच इंद्रियों के पाँच विषय हैं और उनकी प्रवृत्तियाँ-व्यापार भी है। जैसे श्रोतेंद्रिय का विषय है, इसका शब्द और व्यापार सुनना। इस तरह पाँचों के विषय अलग होते हैं। कान में शब्द पड़ते हैं, वे कभी मन को भी दुखी या सुखी बना सकता है। आदमी के सुखी या दु:खी बनने में मूल राग या द्वेष का भाव होता है। विषय तो निमित्त बनते हैं।

आदमी की साधना ये होनी चाहिए कि राग और द्वेष में न जाएँ। राग होगा तो दु:ख होगा। राग के समान दु:ख नहीं और त्याग के समान सुख नहीं होता। राग है तो सामान्य आदमी में द्वेष भी हो सकता है। राग-द्वेष से कर्म बंध तो होता ही है, पर कहीं-कहीं कठिनाई भी पैदा हो सकती है।

जो विषय है, वे आदमी में न तो समता भाव पैदा करते हैं, न ये विषमता या विकृति में ले जा सकते हैं। भीतर का मोह या राग-द्वेष का भाव इन विषयों के निमित्त में उदिप्त हो सकता है। अपराध के कार्य कराने वाले राग-द्वेष ही हैं। युद्ध भी शुरू होने से पहले आदमी के दिमाग या भावों में शुरू होता है।

आदमी ध्यान दे कि वह इन विषयों के प्रति ज्यादा आसक्त न हो, ज्यादा राग-द्वेष ना करे, समता-शांति में रहने का प्रयास करें। यह एक प्रसंग से समझाया कि अति सर्वत्र वर्जित होती है। हम पदार्थ के प्रति ज्यादा आसक्त न हो। परहेज पर ध्यान रखें। कारण ऐसा बनता है कि अकाल मृत्यु हो जाती है। ये विषयासक्ति है, ये आत्मा की दृष्टि से भी नुकसान करने वाला तत्त्व है और व्यवहार में भी कुछ कठिनाई पैदा हो सकती है।

आदमी भोजन करे, उस समय भोजन की ज्यादा प्रशंसा या निंदा नहीं करनी चाहिए। इन बातों से हम आगे की ओर बढ़ सकते हैं। भीतर की ओर जा सकते हैं। रहो भीतर, जीयो बाहर। बाहर भी जीना होता है। आत्मा में भी रहने का प्रयास करना चाहिए। यह सूत्र अध्यात्म की साधना से बहुत महत्त्वपूर्ण है।

सुजानगढ़ में कल आना हुआ था। कल विहार करना है। सुजानगढ़ के हमारे कई चारित्रात्माएँ भी हैं। सभी चारित्रात्माएँ अपनी साधना में, सेवा में विकास करते रहें। श्रावक-श्राविकाएँ भी हैं। अतीत में सेवाएँ दी हैं, वर्तमान में भी सेवाएँ दे रहे हैं। मांगीलाल सेठिया को गुरुदेव ने फरमाया था—अजात शत्रु। मुनि पदमकुमार जी भी आए हैं। इनकी संघ भक्ति-संघनिष्ठा अच्छी है। खूब सेवा भावना और चित्त समाधि बनी रहे।

सुजानगढ़ समाज द्वारा नागरिक अभिनंदन

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में सुजानगढ़ विधायक मनोज मेघवाल, नगर परिषद चेयरमैन निलोफर गोरी, बी०एल० भाटी, सविता राठी, मधु बागरेचा (पार्षद), धमेन्द्र चोरड़िया, अमित मारोड़िया, डालमचंद मालू, विद्याधर, सुभाष बेदी (गांधी आश्रम), तनसुख बैद, अजय चौरड़िया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाते हुए कहा कि सुजानगढ़ के सभी समाज के लोग स्वागत में खड़े थे। सद्भावना प्रकट हो रही थी, वो अपने आपमें अच्छी बात है। सुजानगढ़ के पूरे शहर में सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति का विकास होता रहे, मंगलकामना।

मुनि योगेश कुमार जी ने 'स्वाम साचा' गीतिका का सुमधुर संगान किया।

कार्यक्रम से पूर्व तेरापंथ महिला मंडल व कन्या मंडल ने गीत, टीपीएफ से प्रगति चोरड़िया, मनीष बैद, तेयुप ने गीत, दिव्या सेठिया, पवन नाहटा, सुनीता डोसी, मोहना सुराणा, तरुण सेठिया, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी ने अपने भावों की प्रस्तुति पूज्यप्रवर की अभिवंदना-स्वागत में दी।

मुनि विजयकुमार जी, साध्वी सम्यक्त्वप्रभाजी, साध्वी विनीतयशाजी, मुनि पदमकुमार जी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति श्रीचरणों में अर्पित की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि पूज्यप्रवर तो भीड़ में रहते हुए एकांत में साधना शील रहते हैं।

ओल्ड एज होम में टेलिविजन प्रदान किया

सेलम।

तेयुप एवं किशोर मंडल द्वारा ओल्ड एज होम आश्रम में एक टेलिविजन प्रदान करवाया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामुहिक उच्चारण से हुआ।

इस सेवा कार्य हेतु सेलम के परिवारों के द्वारा सहयोग राशि प्रदान हुई। इस अवसर पर तेयुप के कई सदस्य उपस्थित रहे। आश्रम संचालक ने परिषद के प्रति आभार व्यक्त किया।

धर्मसंघ में विनय के भाव सुरक्षित रहें...

(पृष्ठ १२ का शेष)

महासभा द्वारा समाज भूषण अलंकरण समर्पण समारोह पर पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आज समाजभूषण अलंकरण प्रदान का उपक्रम चल रहा है। जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा जो संस्था शिरोमणी है। तेरापंथ समाज का सर्वोच्च सम्मान है—समाज भूषण। कई-कई महानुभावों को वह दिया जाता रहा है। उसी शृंखला में आज दो व्यक्तियों-श्रावकों को जो एक-दो विद्यमान और एक असाक्षात विद्यमान को प्रदान किया गया है।

यह समाज भी एक ऊँची कोटि का समाज है। कन्हैयालाल ने लंबे काल तक धर्मसंघ की सेवा की है, मैंने उनको देखा है। समाज सेवा के साथ साधु संस्था की अंतरंग सेवा में उनका विशेष योगदान रहा। वे विश्वासपात्र श्रावक रहे हैं। जिस कार्य के लिए वे भेजे जाते थे, उसमें बहुधा वे सफल संपन्न कर आ जाते थे। वे हमारे अंतरंग सेवी थे। मैंने उनको संघ-सेवी के रूप में सरदारशहर में कहा था। शासन सेवी तो वे पहले से ही थे। अनेक रूपों में उन्होंने सेवाएँ दी थी।

पद्मचंद पटावरी भी समाज की, धर्मसंघ की सेवा में लगे रहते हैं। ये समाज के लिए सोचते हैं। सुझाव देना भी इनका काम है। छाजेड़ परिवार पर भी कन्हैयालाल का प्रभाव जमा रहे। उनकी बातों से प्रेरणा मिलती रहे। साध्वी वंदनाश्री उनकी संसारपक्षीय पौत्री हैं।

जेसराज सेखाणी का इतनी अवस्था में भी उनका पुरुषार्थ अपने ढंग का है। इस उम्र में उठ-बैठ कर वंदना करना आश्चर्य है। इनकी साधना भी अच्छी चल रही है। अमृतवाणी का जो कार्य हुआ है, वो तो उनका बड़ा योगदान है, जो आचार्यों की वाणी को सुरक्षित रखा है। वयोवृद्ध श्रावक है। सुखराज भी सेवाएँ दे रहे हैं। परिवार पर भी सेवा का प्रभाव बना रहे। सेखाणी में श्रावकत्व भी बोलता है। साधु-संतों के प्रति इनके भक्ति-विनय के भाव हैं। साधक है। सेखाणी का भी खूब अच्छा साधना का क्रम चलता रहे, चित्त में समाधि रहे। आध्यात्मिक साधना आगे प्रवर्धमान रहे।

पूज्यप्रवर ने बायतू निवासियों के लिए फरमाया कि आगामी सन् २०२३ का मर्यादा महोत्सव बायतू में होना घोषित है। बायतू का मर्यादा महोत्सव भी खूब आध्यात्मिक-उत्साह से परिपूर्ण हो। बायतू के लिए तो एकदम पहला मौका है कि अपने गाँव में मर्यादा महोत्सव देखना गौरवपूर्ण बात हो सकती है। आध्यात्मिक-धार्मिक अच्छा कार्य होता रहे, मंगलकामना। उत्साह बना रहे।

मुख्य मुनिश्री ने कहा कि आचार्य भिक्षु एक दूरदर्शी आचार्य थे और उन्होंने दूरदर्शी मर्यादाओं का निर्माण किया था। जयाचार्य ने इन मर्यादाओं को महोत्सव के रूप में स्थापित किया था। तेरापंथ धर्मसंघ अनूठा धर्मसंघ है, जहाँ मर्यादाओं का इतना सम्मान है। 'वार्षिक मर्यादा महोत्सव आगम, खुशियों की झोली भर लाया'। गीत का सुमधुर संगान किया। हमारे में गुरुभक्ति संघ के प्रति अनुरक्ति और मर्यादाओं की शक्ति हो। हमारा स्वार्थ परमार्थ के लिए हो। संघ एक महान सागर है। संघ हित को प्रमुखता देने वाला स्वयं का हित कर लेता है। जो वृक्ष से जुड़ा होता है, उसे ही सींचन प्राप्त होता है। संघ में रहकर ही व्यक्ति सम्यक् साधा व विकास कर सकता है।

साध्वी वर्याजी ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें मर्यादित तेरापंथ धर्मसंघ प्राप्त हुआ है। संघ हमारे लिए शरण, श्रण-श्राण, गति, प्रतिष्ठा और साधना का आधार है। संघ में रहने वाला ही सम्मान को प्राप्त करता है। संघ के सहारे ही हम गंतव्य स्थान तक पहुँच सकते हैं। विकास की दृष्टि से तेरापंथ जैन धर्म का अग्रणी संघ है। संघ से ही दिशा और व्यवस्था मिलती है।

शासन गौरव साध्वी कनकश्रीजी ने समझाया कि यह महोत्सव बहुआयामी कार्यक्रम का महोत्सव है। मर्यादा महोत्सव आध्यात्मिक और अलौकिक पर्व है। संकल्प और समर्पण रूपी दोनों पंख हो तो ऊँचे आकाश में उड़ान भरी जा सकती है। पाँच निष्ठाएँ हैं—नायक निष्ठा, न्यायनिष्ठा, नीति निष्ठा, नेमनिष्ठा और नवनिर्माण निष्ठा।

मुनि उदित कुमार जी ने समझाया कि आचार्य भिक्षु का समर्पण भाव वीर वाणी के प्रति बेजोड़ था। समर्पण चेतना अद्वितीय थी। आचार के साथ अनुशासन साथ-साथ में चले तो जीवन में पूर्णता आ सकती है। गुरु के प्रति सर्वात्मना समर्पण का भाव हो।

विकास परिषद के सदस्य पद्मचंद पटावरी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। उन्होंने बताया कि श्रावक समाज में जो स्नेह समर्पण की भावना है, उससे संघ की श्रीवृद्धि हुई है।

जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा द्वारा समाज भूषण अलंकरण समारोह का कार्यक्रम आयोजित हुआ। स्व० कन्हैयालाल छाजेड़, श्रीडूंगरगढ़ एवं जेसराज सेखाणी-बीदासर को समाज भूषण अलंकरण से सम्मानित किया गया। महासभा अध्यक्ष सुरेश गोयल ने दोनों परिवारों के प्रति अपनी भावना अभिव्यक्त की। प्रशस्ति पत्र का वाचन मुख्य न्यासी भंवरलाल बैद एवं पूर्व महासभाध्यक्ष किशनलाल डागलिया द्वारा किया गया।

छाजेड़ परिवार की ओर से कन्हैयालाल छाजेड़ की पौत्री मनीषा राखेचा एवं सेखाणी परिवार की ओर से सविता सेखाणी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

छापर चातुर्मास व्यवस्था समिति एवं बायतू मर्यादा महोत्सव समिति द्वारा प्रस्तुति हुई। बायतू मर्यादा महोत्सव प्रतीक चिह्न का अनावरण हुआ।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि हम संघ और संघपति का सम्मान करें।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 - 20 फरवरी, 2022

✦ *वे व्यक्ति धन्य हैं, कृतपुण्य हैं, जिनके मन में सत्य के प्रति आकर्षण होता है, जो असत्य से बचने का प्रयास करते हैं।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

स्व० कन्हैयालाल छाजेड़ एवं जेसराज सेखाणी को समाज भूषण अलंकरण

धर्मसंघ में विनय के भाव सुरक्षित रहें, वर्द्धमान रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

बीदासर, ६ फरवरी, २०२२

बीदासर का वृहद रजत मर्यादा महोत्सव। त्रिदिवसीय समारोह का दूसरा दिवस। तेरापंथ धर्मसंघ का यह महाकुंभ है, जो प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला महा-उत्सव है। कितनी-कितनी चारित्रात्माएँ श्रीचरणों में पहुँचते हैं। वर्ष भर की सारणा-वारणा और भविष्य में करणीय कार्यों का आंकलन कर योजनाएँ बनती हैं। गुरु के प्रति समर्पण भाव और श्रद्धा ही तेरापंथ है।

तीर्थंकर के प्रतिनिधि, तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि अर्हत वाङ्मय में शास्त्रकार ने बताया कि विनीत को संपत्ति प्राप्तकर्ता के रूप में प्रदर्शित कहा गया है और अविनीत व्यक्ति को विपत्ति प्राप्तकर्ता के रूप में दिखाया गया है।

हमारे जीवन में विनय का बहुत महत्त्व है। निरहंकारिता, घमंडरहित करना। घमंड हानिकारक सिद्ध हो सकता है। हमारे धर्मसंघ में विनय के संस्कार दिए जाते रहे हैं।

आज माघ शुक्ला षष्ठी है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ का आचार्य पदारोहण दिवस है। मैंने परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी को देखा है, कई वर्षों तक उनके निकट रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी में विनय का व्यवहार था। गुरु के पास तो उनका अपना विनय भाव था। गुरुदेव तुलसी उन्हें कहा करते थे कि तुम कैसे आचार्य हो जो साधारण साधु की तरह वंदना करते रहते हो।

गुरुदेव महाप्रज्ञ जी में जो विनय के भाव थे वो हम साधु-साध्वियों में आएँ। आज हमारे धर्मसंघ में साधु-साध्वियों को देख लो, उनमें गुरुओं के प्रति व औरों के प्रति भी यथोचित विनय व्यवहार देखने को मिलता है। श्रावक-श्राविकाओं में भी विनय के भाव है, सेवा का भाव है, वो उल्लेखनीय है, ऐसा मुझे लगता है।

निष्कर्ष के रूप में देखें तो हमारे धर्मसंघ में अतीत में भी और वर्तमान में भी विनय का भाव, सेवा का भाव देखने को मिलता है।

आचार्य महाप्रज्ञजी आचार्य तुलसी के पास लंबे काल तक रहे, वे आचार्य तो ऐसे बने थे कि हमारे धर्मसंघ में आज तक कोई बना ही नहीं है कि गुरु के सामने आचार्य बन जाना। इस मायने में वे कीर्तिमान पुरुष हैं। आचार्य बनने के बाद भी उनका अपने गुरु के प्रति इतना ही विनय भाव था।

गुरुदेव तुलसी में भी कितने विनय-समर्पण के भाव थे। जयपुर प्रसंग को समझाया। गुरुदेव तुलसी पट्ट से उतरकर मंच पर विराज गए। आचार्य भिक्षु एवं पूज्य कालूगणी के प्रति भी कितने विनय के भाव थे। ये विनय के भाव सुरक्षित रहे व आगे भी वर्धमान रहे।

मर्यादावली में बाँचते हैं—आज्ञा धर्म है। आज्ञा की सम्यक् आराधना करूँ। शास्त्र-आगम की आज्ञा। आगम में उल्लेखित है, उसके प्रति हमारा सम्मान का भाव हो। आगम की वाणी व्याख्यान का आभूषण होती है। अग्रणी को तो व्याख्यान के प्रति रूझान रखना चाहिए। आगम में जीवनोपयोगी साधनोपयोगी सामग्री प्राप्त हो सकती है।

हमारे यहाँ जो आगम का कार्य हुआ है, वो विशेष है, फिर भी और ध्यान देने की अपेक्षा है। टिप्पण-अनुवाद की कई जानकारियाँ मिल सकती हैं। आचार्य की आज्ञा भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। साधु-साध्वियों की इतनी विशेषता है कि कोई गुरु की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता है। आचार्य की आज्ञा के प्रति सम्मान का रूझान हो। युवाचार्य जीत के जीवन के प्रसंग को समझाया। यह हमारे लिए आदर्श है।

मर्यादा का सम्यक् पालन करूँगा। मर्यादाओं का भी सम्यक् पालन होता है। हमारे धर्मसंघ में अहंकार और ममकार से व्यवस्थागत भी कुछ दूर रहने का मौका मिला हुआ है। जैसे पद का उम्मीदवार नहीं बनूँगा। शिष्य नहीं बनाना। अनेक छोटी-बड़ी मर्यादाएँ हैं, उनके प्रति सम्मान का भाव हो।

आचार्य की आराधना करो। आचार्य की सेवा-सुश्रुषा जो की जाती है। आचार्य भिक्षु और खेतसीजी स्वामी के प्रसंग को समझाया। हमारे साधु-साध्वियाँ अपनी सीमा में सेवा करते रहते हैं। आचार्यों के इंगित-दृष्टि की आराधना करना भी एक प्रकार की सेवा है।

गण का सम्यक् अनुगमन करूँगा। संघ की आराधना करना, अनुगमन करना और संघनिष्ठा रखना। संघ मेरा है। मैं संघ का हूँ। संघ की सेवा करें, इसके विकास में योगदान दें। सभी किस प्रकार सेवा में संलग्न हैं।

धर्म को मैं कभी नहीं छोड़ूँगा। धर्म कोई कपड़ा नहीं जो पहन लिया और उतार दिया। धर्म है, वह चेतना जो भिन्नता सहता नहीं। धर्म वह चेतना है, जो अभिन्न है। धर्म के प्रति निष्ठा भी अभिन्न रूप में रहे। यह भी काम्य है।

यह मर्यादा महोत्सव का समय, आज अनेक चारित्रात्माओं ने वक्तव्य दिए हैं। हम उनकी बातें सुनकर जीवन में उतारें तो वो हमारे लिए श्रेयस्कर और कल्याणकारी हो सकती है। हम अपने धर्मसंघ और आत्मा के प्रति जागरूक रहे। मूल तो हमें आत्मा का कल्याण करना है। आत्मा के कल्याण के लिए हमने संघीय व्यवस्था को किया है। हम सभी आत्मोत्थान की दिशा में आगे बढ़ें, यह काम्य है। **(शेष पृष्ठ ११ पर)**

अहिंसा यात्रा : चित्रमय झलकियाँ

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**